ओ३म् प्राणाय नमो यस्य सर्वमिदं वशे ।
वैदिक प्रश्नोत्तरी
Spiritual Questions and Answers
अध्यात्मिक प्रश्न उत्तर
डॉ मुमुक्षु आर्य

जीवात्मा सम्बन्धी प्रश्न

१. क्या जीवात्मा वस्तु है ? (है, जिसके सहारे गुण रहें वह वस्तु होती है)
२. जीवात्मा के गुण, कर्म, स्वभाव व स्वरूप क्या है ? (पुस्तक में ढूंढे)
३. शरीर में किस स्थान पर है ? (हृदय देश में)
४. जीवात्मा परिछिन्न है या विभु ? (परिछिन्न)
५. जीवात्मा कूटस्थ नित्य है या परिणामी नित्य ? (कूटस्थ नित्य)
६. जीवात्मा का आकार, रंग, रूप, भार, लिंग, संख्या, शरीर, कोष, अवस्थाऐं, भेद व शक्तियाँ क्या हैं ? (पुस्तक में ढूंढे)
७. जीवात्मा शरीर क्यों धारण करता है और कब तक ? (अविद्या के कारण)
८. जीवात्मा का बन्धन और मुक्ति क्या है ? (जन्म लेना, जन्म-मरण से छूटना)
९. जीवात्मा को दूसरा शरीर पाने में कितना समय लगता है ? (क्षणभर)
१०. शरीर के अन्दर कर्ता कौन, भोगता कौन ? (जीवात्मा)
११. जीवात्मा की प्रलय में क्या स्थिति होती है ? (गाढ़ निद्रा में)
१२. जीवात्मा मृत्यु के समय शरीर कैसे छोड़ता है ? (किसी भी स्थान से)
१३. क्या जीवात्मा दूसरे के द्वारा किये कर्मों का फल पाता है ? (नहीं)
१४. क्या जीवात्मा ब्रह्म, ब्रह्म का अंश या प्रतिबिम्ब है ? (नहीं)
१५. जीव और ईश्वर में समानतायें और भेद क्या है ? (दोनों सत् चित्, अनादि, अजर-अमर, निराकार । भेद - सर्वज्ञ, अल्पज्ञ, सर्वदेशी, एकदेशी)
१६. भोजन कौन खाता है जीवात्मा या शरीर ? (अकेला कोई नहीं खा सकता)
१७. क्या मनुष्य कुत्ते विल्ली आदि की पृथक-पृथक आत्माएं हैं ? (नहीं)
१८. जीवात्मा के पर्यायवाची शब्द क्या हैं ? (आत्मा, जीव, रूह, Soul, इन्द्र, पुरुष)
१९. सृष्टि उत्पत्ति में जीवात्मा कौन सा कारण है ? (साधारण कारण)
२०. क्या जीवात्मा ही ईश्वर हो जाती है ? (नहीं)
२१. क्या जीवात्मा और बुद्धि में भेद है ? (है, जीवात्मा चेतन, बुद्धि जड़)
२२. जीवात्मा को तर्क व शास्त्रीय प्रमाणों द्वारा सिद्ध क्रर सकते हैं ? (कर सकते हैं, पुस्तक में ढूंढे)

॥ ओ३म् ॥

वैदिक प्रश्नोत्तरी

(101 आध्यात्मिक प्रश्न-उत्तर)

लेखक

डॉ. मुमुक्षु आर्य

पुस्तक प्राप्ति स्थान

- वेद संस्थान, जी-6, सैक्टर-12, नोएडा-201301
  दूरभाष 0120-2553467, 9350206476
- आर्य प्रकाशन - 814, कुण्डेवालान, अजमेरी गेट, दिल्ली-110 006
  दूरभाष 23233280
- दर्शनयोग महाविद्यालय, आर्यवन, रोजड़, पोस्ट सागपुर, जिला साबरकांठा, गुजरात - 383307, दूरभाष 23233280
- आर्य समाज, आर्य नगर, पहाड़गंज, नई दिल्ली-55, दूरभाष 23514517
- वैदिक प्रकाशन, संगतराशान, पहाड़गंज, नई दिल्ली-55, दूरभाष 51541132

मूल्य रूपये 20/-

।। अनुक्रमणिका ।।

।। ओ३म् ।।

वैदिक प्रश्नोत्तरी

भूमिका

इस पुस्तक में वेद, उपनिषद्, दर्शन आदि आर्ष ग्रन्थों का संक्षिप्त परिचय एवं उनके द्वारा दी गई कुछ शिक्षाओं को सरल व रोचक ढंग से प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है ताकि प्रत्येक वर्ग के लोग इससे लाभान्वित हो सकें । पाठ्य पुस्तकों, समाचार पत्रों, दूरदर्शन आदि के माध्यम से कई प्रकार का ज्ञान-विज्ञान दिया जाता है परन्तु आत्मा, परमात्मा व प्रकृति के यथार्थ रुप को वताने वाले माध्यमों की संख्या नाम मात्र ही है । संस्कृत भाषा की उपेक्षा होने के कारण वेद, उपनिषद, दर्शन आदि ग्रन्थों में वर्णित गूढ रहस्यों से प्रायः जनसाधारण अनभिज्ञ ही रह जाते हैं । उस कमी को पूरा करने के लिए हमारी यह प्रश्नोत्तरी के रुप में पुस्तक प्रस्तुत है । इन प्रश्नों व उत्तरों के माध्यम से छोटे बच्चों को भी जीवन के गूढ़ रहस्यों से परिचित करवाया जा सकता है । बच्चों को सुशिक्षित, संस्कारित एवं चरित्रवान बनाना माता पिता एवं आचार्यों का मुख्य कर्तव्य है। शतपथ ब्राह्मण में कहा भी है-मातृमान् पितृमान् आचार्यवान् पुरुषो वेदः- अर्थात जब माता पिता एवं आचार्य तीन उत्तम शिक्षक हों तभी बालक ज्ञानवान् हो सकता है । अतः माता पिता एवं अध्यापकों का कर्तव्य है कि वे इन प्रश्नों व उत्तरों को स्वयं स्मरण करें एवं अपने बच्चों व शिष्यों को स्मरण करवाएं और प्रतिदिन उनको दोहराएं । अच्छी तरह स्मरण होने पर सप्ताह में एक बार दोहराएं। इससे बच्चों पर बड़े अच्छे संस्कार पड़ेगें और उनके आत्म कल्याण

का मार्ग प्रशस्त होगा । सन्तान माता पिता की ही नहीं अपितु समाज व राष्ट्र का सर्वोत्तम धन होती है । इनका निर्माण करने से ही हम उनसे कुछ आशा कर सकते हैं । इस पुस्तक में वेद, उपनिषद् दर्शन आदि ऋषि कृत ग्रन्थों की साधारण जानकारी ही दी गई है । विस्तृत जानकारी के लिए इनका विस्तार से अध्ययन करना आवश्यक होगा । इन ग्रन्थों सम्बन्धी दी गई साधारण जानकारी से आज बड़े-बड़े विद्वान, अध्यापक, प्रोफैसर, नेतागण एवं मतमतान्तरों के कुछ गुरुजन भी अनभिज्ञ पाए जाते हैं । यदि आप एवं आपके बच्चे इससे अवगत हो जाते हैं तो आपके लिए यह एक बड़ी उपलब्धि होगी । आशा है सुधी पाठक गण इसके प्रचार प्रसार में भी यथा शक्ति सहयोग करेगें ताकि आम जनता भी हमारे प्राचीन आध्यात्मिक साहित्य एवं ऋषि-मुनियों के स्वर्णिम वचनों से एवं उपदेशों से लाभान्वित हो सके और उनकी इन ग्रन्थों के प्रति रुचि बढ़े और समाज में धर्म वं ईश्वर के नाम पर फैले आडम्बरों, मतभेदों एवं मनभेदों का समूल नाश हो । प्रभु से प्रार्थना है कि हमारा देश पुनः ऋषि-मुनियों की भूमि व विश्वगुरु कहलाने लगे ।

विनीत

डॉ मुमुक्षु आर्य

वेदसंस्थान, जी-6, सैक्टर-12, नोएडा - 201301

दूरभाष : 0120-2553467, 9350206476

।। ओ३म् सच्चिदानंद परमेश्वराय नमो नमः ।।

वैदिक प्रश्नोत्तरी

प्रश्न अनादि शब्द का क्या अभिप्राय है ?

उत्तर जिसका कोई प्रारम्भ न हो और अन्त भी न हो । जिसकी उत्पत्ति के तीन मूल कारण न हों, प्रत्येक वस्तु की उत्पत्ति के तीन कारण होते हैं जैसे रोटी बनाने के लिए आटा चाहिए, रसोईया चाहिए, चकला - बेलन, पानी आदि चाहिए । आटा रोटी उपादान कारण है । रसोईया रोटी का निमित्त कारण है । चाक, बेलन, आग-पानी आदि रोटी का साधारण कारण हैं । जिस वस्तु की उत्पत्ति के लिए ये तीन कारण न हों वह अनादि कहलाती है, अर्थात् अनादि वस्तुएं अपने आप ही बनी होती हैं । उन्हें कोई बनाने वाला नहीं होता । जो समस्त कार्यों के कारणों का कारण और फिर उसका कारण न हो ।

प्रश्न २ अनादि शब्द के पर्यायवाची शब्द क्या हैं ?

उत्तर स्वयंभू, स्वयं-सिद्ध, इटरनल (Eternal), शाश्वत, सनातन,

प्रश्न ३ अनादि वस्तुएँ कितनी हैं और उनके क्या क्या नाम हैं ?

उत्तर अनादि वस्तुएँ तीन हैं और उनके नाम हैं -
१. ईश्वर २. जीव (जीवात्मा) ३. प्रकृति (परमाणु)

प्रश्न ४ अनादि वस्तुओं के गुण क्या-क्या हैं ?

(क) अनादि वस्तु ईश्वर के गुणः- सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उनका आदि मूल है, - ईश्वर

सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वन्तरयामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र, सृष्टिकर्ता, सृष्टिधर्ता, सृष्टिहर्ता एवं मोक्ष दाता है ।

(ख) अनादि वस्तु जीव के गुण :- सुख, दुख, इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, ज्ञान, निमेश, उन्मेश, गमन, मनन, इन्द्रिय, अन्तर्विकार, सत, चित्, अनादि, अनेक, अजर, अमर, अल्पज्ञ, परिच्छिन ।

(ग) अनादि वस्तु प्रकृति के गुण :- सत्व- रज- तम त्रिगुगात्मक, जड़, परिच्छिन, अजर, अमर । प्रकृति के तीन प्रकार के कण होते हैं - सत्व अर्थात् प्रकाशशील, रज अर्थात् गतिशील, तम अर्थात् प्रकाश व गति रहित।

प्रश्न ५ अनादि वस्तुओं का कारण क्यों नहीं होता अर्थात् वह अपने आप कैसे हैं ?

उत्तर अनादि वस्तुएँ मूल कारण हैं और मूल का मूल नहीं होता ।

प्रश्न ६ सृष्टि उत्पत्ति के तीन कारण कौन कौन से हैं ?

उत्तर प्रत्येक वस्तु की उत्पत्ति के तीन कारण होते हैं । निमित्त कारण, उपादान कारण, साधारण कारण । इसी प्रकार सृष्टि उत्पत्ति के तीन कारण निम्न प्रकार हैं -

(क) निमित्त कारण (Efficient Cause) = ईश्वर
(ख) उपादान कारण (Material Cause) = प्रकृति

अर्थात् परमाणु (Primordial matter, Neutrinz)

(ग) साधारण कारण (Instrumental Cause) = जीवात्माएं, समय, स्थान, ज्ञान ।

प्रश्न ७ प्रकृति और सृष्टि में क्या अन्तर है ?

उत्तर प्रकृति = परमाणुओं को कहते है और वे अनादि है । सृष्टि = परमाणुओं से बने सूर्य, चाँद, तारे, पृथिवी, वायु आकाश जल, फल, फूल, अन्न आदि को सृष्टि कहते हैं और यह अनादि नहीं एक निश्चित काल के बाद नष्ट हो जाती है ।

प्रश्न ८ प्रकृति अर्थात् परमाणुओं से सृष्टि अर्थात् सूर्य, चाँद, तारे आदि कौन बनाता है ?

उत्तर ईश्वर ।

प्रश्न ९ ईश्वर परमाणुओं से सृष्टि कैसे बनाता है ?

उत्तर ईश्वर परमाणुओं में हलचल पैदा कर देता है । हलचल के कारण वे आपस में जुड़ने प्रारम्भ हो जाते हैं । जुड़ते–जुड़ते लाखों वर्षों में सृष्टि के सब पदार्थ बन जाते हैं ।

वेद ने इस प्रक्रिया को इस प्रकार कहा है –

परमाणु ⇨ महतत्व ⇨ अंहकार ⇨ ५ सूक्ष्म भूत, ५ ज्ञानेन्द्रियां, ५ कर्मेन्द्रियां एवं मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार। ५ सूक्ष्म भूतों मे ५ स्थूल भूत अर्थात् पृथिवी, आग, तेज, वायु, आकाश, सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र, सब प्रकार के बीज, मेघमण्डल, समुन्द्र, जीव जन्तु, पशु, पक्षी, नर, नारी ।

प्रश्न १० ईश्वर सृष्टि को क्यों बनाता है ।

उत्तर हमारे सुंख के लिए, हमारे कर्मों का फल हमें भुगाने के लिए, सब दुःखों से छूट कर मोक्ष प्राप्ति करना इसका मुख्य उद्देश्य है ।

प्रश्न ११ सूर्य, चाँद, तारे किसके सहारे खड़े हैं ?

उत्तर एक दूसरे के आकर्षण के सहारे टिके हुए हैं परन्तु मुख्य व अन्तिम सहारा ईश्वर का है ।

प्रश्न १२ हमने सुना है कि पृथिवी बैलों के सींग पर खड़ी है और जब सींग बदलता है तो भूचाल आता है ?

उत्तर यह कोरी गप्प है । पृथिवी बैल के सींग पर खड़ी है तो बैल कहां खड़े हैं ?

प्रश्न १३ पहले अंडा या पहले मुर्गी ?

उत्तर आदि सृष्टि माता पिता के द्वारा नहीं होती । ईश्वर पृथिवी के गर्भ में परमाणुओं के मिलान से प्रत्येक जीव-जन्तु, पशु-पक्षी व नर-नारी का रज-वीर्य बनाता है उसका मिलान करके अंडे बनाता है, उन अंडो से सभी जीव जन्तु, पशु-पक्षी, नर-नारी उत्पन्न होते हैं । इसलिए कह सकते है पहले अंडा फिर मुर्गी ।

प्रश्न १४ प्रारम्भ में माता पिता के बिना बच्चे उत्पन्न होते हैं तो उन्हें पालता कौन हैं ?

उत्तर प्रारम्भ में सभी प्रकार के बच्चे युवावस्था तक पृथिवी माता से संरक्षण प्राप्त करते हैं और ईश्वर की देख रेख में होते हैं । युवावस्था के पश्चात् उनका पृथिवी से सम्पर्क

टूट जाता है और वे स्वतन्त्र रूप से घूमने फिरने, तैरने, उड़ने लगते हैं ।

प्रश्न १५ आदि सृष्टि कें युवावस्था के नर नारी देखने में कैसे लगते थे ?

उत्तर दीखने में ७-८ फुट के लम्बे, गोरे, दीर्घायुवाले, दाड़ी मूँछ वाले, नग्न और ज्ञान विज्ञान से शून्य होते हैं ।

प्रश्न १६ बिना माता, पिता व गुरूओं या अध्यापकों के उन्हें ज्ञान किसने दिया ?

उत्तर ईश्वर ही सबका आदि और शाश्वत पिता, माता और गुरू है वही सब ज्ञान विज्ञान ऋषियों के मन में प्रगट करता है, ऋषि ज्ञान- विज्ञान को सब को वताते हैं । लाखों वर्षों तक सब ज्ञान विज्ञान एक दूसरे से सुन-सुना कर फैलता रहा । सम्भवतः राजा इक्ष्वाकु के काल में यह ज्ञान विज्ञान भोज पत्रों व पुस्तक आदि के रूप में सामने आया जो वेद के रूप में जाना जाता है ।

प्रश्न १७ वेदों की भाषा क्या है ?

उत्तर वेदों की भाषा संस्कृत है जो ईश्वरीय भाषा है, दैवी भाषा है जिसे अच्छी प्रकार से समझने के लिए ऋषियों ने ईश्वर की सहायता से अष्टाध्यायी व्याकरण, महाभाष्य, निरुक्त, निघन्टु आदि ग्रन्थ लिखे हैं । जब से सृष्टि बनी है तब से लेकर महाभारत युद्ध पर्यन्त पूरे विश्व में सब विद्यार्थियों को यही भाषा और वेद पढ़ाये जाते थे । उस समय के स्कूल, कालिज़ों का नाम गुरुकुल था जो प्रायः जंगलों में

होते थे । लड़के-लड़कियों के गुरुकुल दूर- दूर होते थे

और उन्हें शिक्षा पूरी होने तक गुरुकुलों में ही रह कर सादा जीवन, आदर्श दिनचर्या आदि का पालन ऋषियों के संरक्षण में रहकर करना होता था । ऋषि पूर्णतया अवैतनिक होते थे । प्रायः ऋषि उच्च कोटि के विद्वान, योगी, महात्मा और निःस्वार्थ होते थे । जब तक इस प्रकार की शिक्षा-दीक्षा रही विश्व में एकता व वैदिकता का साम्राज्य था । आजकल भी कहीं कहीं इस प्रकार का प्रयास किया जाता है । एक खोज के अनुसार मैकाले के काल में भारत में ५ लाख गुरुकुल थे । जो धीरे-धीरे बन्द हो गए एवं अंग्रेजी मीडियम स्कूल-कालिजों का प्रचलन हो गया ।

प्रश्न १८ वेद संस्कृत में ही क्यों ?

उत्तर संस्कृत दैवी भाषा है, पूर्ण भाषा है सब भाषाओं की जननी है, इसे सीखने के लिए सबको एक जैसी मेहनत करनी पड़ती है । कम्पयूटर वैज्ञानिकों ने भी इसे सर्वाधिक उपयोगी और पूर्ण भाषा माना है । सृष्टि के प्रांरम्भ में बस यही एक भाषा थी और बहुत काल तक रही । उस समय मनुष्य जाति हिन्दू, मुस्लिम, सिख, इसाई, जैन आदि में विभक्त न थी । ईश्वर की महान कृपा से अनेक विद्वानों, ॠषियों व संतो ने वेद की कुछ शिक्षाओं को प्रचलित भापाओं में भी प्रगट किया है । वेदों का हिन्दी व अंग्रेजी में भी अनुवाद हो चुका है ।

प्रश्न १९ क्या वेदों में ईश्वर ने प्रवचनों के रूप में ज्ञान विज्ञान दिया है ?

उत्तर नहीं, वेद ज्ञान मन्त्रों के रूप में है । इन मन्त्रों की रचना बड़ी अद्भुत है और उनके अर्थ भी बड़े गूढ़ और प्रेरणादायक हैं । सम्पूर्ण मनुष्य जाति के कल्याण के लिए शिक्षाएं हैं, शारीरिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, वैज्ञानिक उन्नति के सूत्र हैं । ईश्वर ने अपने परिचय के साथ- साथ मनुष्य जाति के लिए आवश्यक सब ज्ञान विज्ञान इन मंत्रों के माध्यम से दिया है । कुल २०३४९ मंत्र हैं और चार भागों में विभक्त हैं- ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद ।

प्रश्न २० सृष्टि के आदि में क्या सभी युवा लड़के लड़कियों को यह ज्ञान - विज्ञान दिया ?

उत्तर नहीं, चार युवा ऋषियों के मन में ये ज्ञान दिया । उनके नाम हैं - अग्नि, वायु, आदित्य, अंगिरा ! उन्होंने ही इन वेद मंत्रों का अर्थ ईश्वर सें जाना और अन्यों को उनका उच्चारण व अर्थ सिखाया । जो पीढ़ी दर पीढ़ी चलता रहा ।

प्रश्न २१ ब्रह्माण्ड में अरबों सौर मण्डल और ग्रह-उपग्रह हैं उन पर भी जीवन होगा । क्या वहां पर भी यही वेदों का ज्ञान विज्ञान है ?

उत्तर हाँ, लगभग सभी ग्रहों, उपग्रहों पर जीवन है और सब स्थानों पर एक जैसा वेदों का ज्ञान-विज्ञान है । उस ज्ञान-विज्ञान के विकास में अन्तर है, कहीं कहीं हो सकता

है आलस्य, प्रमाद आदि के कारण लुप्त हो गया हो। इस पृथिवी पर वेदों के ज्ञान विज्ञान के कम होने या लुप्त होने का मुख्य कारण महाभारत युद्ध था जिसमें बड़े बड़े ऋषि मुनि व वेदों के विद्वान् मारे गए ।

प्रश्न २२ सभी ग्रहों-उपग्रहों पर जीवन है - यह बात आप निश्चयपूर्वक कैसे कह सकते हैं आजकल के वैज्ञानिक तो इस बात को नहीं मानते ?

उत्तर ईश्वर की बनाई कोई वस्तु बिना किसी उदेश्यय के नही हैं । हमारे शास्त्रों ने इनको बसु कहा है अर्थात् बसाने वाले । बसाने वाले का अर्थ बसाने में सहायक भी होता है जैसे सूर्य सोचने की बात है कि यदि यह छोटा सा पृथिवी लोक मनुष्यों, जीव-जन्तुओं, पशु-पक्षियों व पेड़-पौधों से भरा हुआ है तो अन्य ग्रह उपग्रह क्यों नहीं ? मंगल ग्रह पर तो वैज्ञानिक भी जीवन मानने लगे हैं । कुछ वस्तुओं के बारे में अनुमान रूप में ज्ञान ही प्रर्याप्त होता है । खरबों रूपया खर्च करके जान जोखिम में डाल कर किसी ग्रह उपग्रह पर पृथिवी लोक की तरह जीवन है - यह निश्चित कर भी लिया तो उसका क्या लाभ ? इसी सौर मण्डल के ग्रहों-उपग्रहों की खोज करना दुष्कर कार्य है अन्य सौर मण्डलों पर प्रकाश की गति से भी जायें तो हजारों लाखों वर्षों का समय मात्र वहां तक पहुँचने के लिए चाहिए । विज्ञान के अनेक क्षेत्रों में अनुमान से ही कार्य लिया जाता है फिर यहाँ क्यों नहीं । पृथिवी पर जीवन है तो अन्यों पर भी होना चाहिए - यह अनुमान

पर्याप्त मानना होगा । जो धन सम्पत्ति इस व्यर्थ की खोज में लगाई जा रही है उसे पृथिवी पर रहने वाले प्राणियों के जीवन को सुन्दर बनाने में लगानी चाहिए, निर्धनता व बेरोजगारी दूर करनी चाहिए ।

प्रश्न २३ क्या कोई ऐसा ग्रन्थ है जिसमें वेद की शिक्षाओं का सरल सार-रूप में वर्णन हो ?

उत्तर हाँ ऐसा एक ग्रन्थ है । वेदों के प्रकाण्ड विद्वान् आदित्य ब्रह्मचारी योगी पुरुष महर्षि दयानन्द जी ने मनुष्य जाति के कल्याण के लिए 'सत्यार्थप्रकाश' नाम का एक ग्रन्थ आज से लगभग १२५ वर्ष पूर्व लिखा था जिसे पढ़कर अनेक लोगों ने वेदों की शिक्षाओं को आत्मसात कर अपना जीवन सफल किया है । यह ग्रन्थ आज़कल हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दु, गुजराती, कन्नड़, फ्रांसीसी आदि कई भाषाओं में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, ३/५ महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली -२ से उपलब्ध है । गोबिन्दराम हासानंद, नई सड़क, नई दिल्ली-२ से भी यह ग्रन्थ एवं वेदादि अन्य ग्रन्थ प्राप्त किये जा सकते हैं ।

प्रश्न २४ सबसे पहले सृष्टि कब बनी, सृष्टि उत्पत्ति काल व प्रलय काल कितना है ?

उत्तर सृष्टि बनने बिगड़ने का क्रम अनादि काल से है इसका कोई प्रारम्भ काल नहीं । जैसे दिन के बाद रात और रात के बाद दिन आते हैं ऐसे ही सृष्टि के बाद प्रलय और प्रलय के बाद सृष्टि का क्रम अनादि काल से चल रहा है।

एक बार उत्पन्न हुई सृष्टि ४ अरब ३२ करोड़ वर्ष तक चलती है और एक बार नष्ट हुई सृष्टि का काल भी इतना ही है।

प्रश्न २५ प्रलय अचानक आ जाती है या धीरे-धीरे ?

उत्तर जिस प्रकार सृष्टि का निर्माण होने में लाखों वर्ष लग जाते हैं उसी प्रकार पूर्ण प्रलय होने में भी लाखों वर्ष लग जाते है। पृथिवी, जल, वायु, आकाश, सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र धीरे-धीरे पुराने होते जाते हैं और एक दिन पूर्णतया नष्ट हो जाएगें। परमाणुओं से सृष्टि के निर्माण में जो प्रक्रिया होती है प्रलय में उसके विपरित होती है। अर्थात् स्थूल भूत ⇨ सूक्ष्म भूत ⇨ मन, बुद्धि, चित्त, अंहकार + ५ ज्ञानेन्द्रियां + ५ कर्मेन्द्रियां- अहंकार - महतत्व - परमाणु (प्रकृति)। आंशिक रूप में भी प्रलय होती रहती है, कोई कोई सूर्य फैलकर ग्रहों-उपग्रहों को जला कर राख कर देता है।

प्रश्न २६ इस समय की सृष्टि को उत्पन्न हुए कितने वर्ष हो गए हैं। क्या इसका कोई अनुमान है ?

उत्तर इस समय की सृष्टि को उत्पन्न हुए १,९७८५३१०५ वर्ष हो गए हैं। वेद ज्ञान को प्रगट हुए १,९६८५३१०५ वर्ष हुए हैं। इसके प्रमाण ऋषि कृत ग्रन्थों में मिलते हैं। इस दृष्टि से अभी सृष्टि का आधा समय (interval) भी नहीं हुआ है।

प्रश्न २७ इस ब्रह्माण्ड में कुल कितने सौर मण्डल हैं क्या इसका कोई प्रमाण शास्त्रों में है ?

उत्तर ऐसा कोई प्रमाण शास्त्रों में नहीं मिलता । हाँ आजकल के वैज्ञानिकों ने खोज की है कि हमारी आकाश गंगा में १०० अरब सौरमण्डल हैं और हमारा सूर्य तो मात्र एक बच्चा है । ऐसी २०० अरब आकाश गंगाओं का वैज्ञानिकों ने अब तक पता लगाया है और उनके चित्र लिए हैं । लेखक ने स्वयं इन चित्रों को एक वैज्ञानिक के पास देखा है ।

प्रश्न २८ सृष्टि उत्पत्तिकाल, प्रलय काल, रामायण काल, महाभारत काल आदि महत्वपूर्ण कालों के बारे में क्या सच्चाई है ?

उत्तर हम नीचे सभी महत्वपूर्ण कालों का वर्णन दे रहे हैं । जो ऋषि कृत ग्रन्थों के अनुसार हैं:-

१. मोक्ष काल ⇨ ३१ नील १० खरब ४० अरब वर्ष
२. परान्त काल ⇨ ३१ नील १० खरब ४० अरब वर्ष
३. सृष्टि उत्पत्ति का काल ⇨ ४ अरब ३२ करोड़ वर्ष
४. सृष्टि प्रलय का काल ⇨ ४ अरब ३२ करोड़ वर्ष
५. वर्तमान सृष्टि काल ⇨१ अरब ९७ करोड़ ८ लाख त्रेपन हजार १०५ वर्ष
६. वर्तमान वेद काल ⇨१ अरब ९६ करोड़ ८ लाख हजार एक सौ पांच वर्ष
७. कलियुग काल ⇨ ४ लाख ३२ हजार वर्ष
८. द्वापर युग काल ⇨८ लाख ६४ हजार वर्ष
९. त्रेतायुग काल ⇨ १२ लाख ९६ हजार वर्ष
१०. सतयुग काल ⇨ १७ लाख २८ हजार वर्ष
११. चतुर्युगी ⇨४३ लाख २० हजार वर्ष

१२. ब्रह्मा का दिन = १००० चतुर्युगी

१३. ब्रह्मा की रात्रि = १००० चतुर्युगी

१४. अहोरात्रि ब्रह्मा का दिन व रात अर्थात् = २००० चतुर्युगी

१५. ब्रह्मा का मास = ३० अहोरात्री

१६. ब्रह्मा का वर्ष = १२ ब्रह्म के मास

१७. परान्त काल/मोक्ष काल = १०० ब्रह्मा के वर्ष = ३६००० बार सृष्टि उत्पत्ति प्रलय समय = २,८८००० अरब वर्ष = ३१ नील १० खरब ४० अरब वर्ष

१८. रामायाण काल लगभग १० लाख वर्ष

१९. महाभारत काल ५२१८ वर्ष

२०. बौद्धमत २६०० वर्ष

२१. शंकराचार्य मत २२०० वर्ष

२२. पौराणिक (मूर्तिपूजा) २१०० वर्ष

२३. ईसाई मत २००५ वर्ष

२४. मुस्लिम मत १५०० वर्ष

२६. सिक्ख मत ५०० वर्ष

प्रश्न २९ कलियुग, द्वापर युग आदि से क्या अभिप्राय है ?

उत्तर ये सब नाम काल की गणना के लिए हैं जैसे सुवह, सुवह के बाद दोपहर, दोपहर के बाद सांयकाल, सांयकाल के बाद रात्रि दिन के विभाग किए हैं ऐसे ही काल के विभाग कलियुग, द्वापर युग, त्रेतायुग, सतयुग आदि किए गए हैं। इसका यह अर्थ कदापि नहीं कि कलियुंग में सभी बुरे लोग होते हैं और सतयुग में सभी अच्छे लोग होते हैं । हम देखते हैं कि सतयुग में राम लक्षमण आदि धर्मात्मा लोग

भी थे । दूसरी ओर कलियुग में बहुत अच्छे लोग भी हैं बुरे भी हैं । अच्छे बुरे लोगों की संख्या में अनुपात इस बात पर निर्भर करता है कि शिक्षा-दीक्षा, आचरण व राज्य व्यवस्था वेद की शिक्षाओं के अनुसार है या नहीं । जब तक वेदानुकुल व्यवस्था थी कलियुग, द्वापर, त्रेता, सतयुग अर्थात् सभी कालों में धर्मात्मा मनुष्यों की संख्या अधिक थी और लोग सुखी थे । जैसे जैसे, जब जब, जहाँ जहाँ वेद की शिक्षाओं की उपेक्षा हुई है लोग दुःखी हुए हैं । वास्तव में अच्छे बुरे लोग प्रत्येक काल में होते हैं उनके अनुपात में अन्तर हो सकता है । धर्मात्मा लोगों के आलसी प्रमादी होने पर भी दुष्ट लोगों के अत्याचार बढ़े हैं । परन्तु अंत में विजय धर्म की ही हुई है ।

प्रश्न ३० सुना है दुष्ट लोगों को मारने के लिए भगवान अवतार लेते हैं । यह बात कहाँ तक सच है ?

उत्तर जो भगवान बिना हाथ पैर के सृष्टि की उत्पत्ति, स्थिति, प्रलय कर सकता है, जीवों को कर्मों के फल दे सकता है उस सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापक परमात्मा को कंस, रावण आदि दुष्टों को मारने के लिए क्या जन्म लेना पड़ेगा ? जब चाहे, जहाँ चाहे, उनका नाश कर सकता है । राम व कृष्ण आदि क्षत्रियों ने योजनाबद्ध तरीके से अस्त्र-शस्त्र की शिक्षा प्राप्त की, तप किया तब जाकर रावण और कंस जैसे शक्तिशाली राज्यों को नष्ट कर पाए । भक्तों ने कालांतर में इन शूरवीरों के साथ अनेक प्रकार के चमत्कार जोड़कर उनकों भगवान का दर्जा दे दिया । वास्तव में भगवान् शब्द आदर के रूप में प्रयोग होता है

जैसे 'भगवन कुत्र गच्छति ? भगवान् किम् नाम अस्ति' डाक्टर तो भगवान का रूप होता है आदि । इसका यह अर्थ नहीं कि भगवान कहने से वह व्यक्ति सृष्टि की रचना करने वाला ईश्वर ही हो जाता है । ईश्वर अजन्मा है तो अजन्मा ही रहेगा, ईश्वर निराकार है तो निराकार ही रहेगा । कोई कुछ भी कहता रहे, ईश्वर के स्वरूप में कभी परिवर्तन नहीं होता । मूर्तिपूजा, अवतारवाद सब स्वार्थी लोगों की मनघड़त बातें हैं । अफसोस है इन मनघड़त बातों को सही सिद्ध करने के लिए बड़े वड़े विद्वान् भी अनेक प्रकार की दलीलें देकर लोगों को बहकाते हैं, और अपने स्वार्थ व दुराग्रह के कारण जनता को वेद का सही मार्ग अपनाने को नहीं कह पाते । आज दूरदर्शन आदि साधनों द्वारा जनता को सच्चाई से प्रभावपूर्ण ढ़ग से अवगत कराया जा सकता था परन्तु इन चैनलों के संचालक भी अर्थ की होड़ में सत्य मार्ग का दिग्दर्शन नहीं करवा पा रहे ।

प्रश्न ३२ पुराणों में अवतारों की व मूर्ति पूजा अथवा साकार पूजा का बड़ा महत्व बताया है पुराण तो महर्षि व्यास जी कृत थे फिर उन्होंने इन बातों का समर्थन कैसे किया ?

उत्तर प्रचलित १८ पुराण वास्तविक पुराण नहीं हैं । ब्राह्मण ग्रन्थों का नाम पुराण है जिनमें ऐसी बातों का लेश मात्र भी वर्णन नहीं । ये १८ पुराण जैनियों की देखा देखी कुछ अविद्वान लोगों द्वारा कल्पित किए गये थे और उनके रचियता का नाम व्यास ऋषि झूठ झूठ में लिखा था ।

जिस समय इन पुराणों की रचना हुई उस समय व्यास ऋषि जी को देह छोड़े लगभग २५०० वर्ष हो चुके थे। जैनियों ने १८ सकन्ध नाम की पुस्तकें लिखी थी। लोगों को नास्तिक होने से बचाने के लिए योजनाबद्ध तरीके से इन पुराणों की रचना की गई या करवाई गई। इन पुराणों में कपोल कल्पित बातों की भरमार है। जो कुछ सत्य व शिक्षाप्रद है वह वेदादि शास्त्रों से लिया गया है। बुद्धिमानों को चाहिए कि जिस प्रकार विष मिले दूध का त्याग कर देना चाहिए उसी प्रकार झूठ मिले इन पुराणों का त्याग कर देना चाहिए।

प्रश्न ३३ क्या मूर्ति पूजा व पुराणों को पढ़ने का कुछ भी लाभ नहीं?

उत्तर जैसे विष मिले दूध को पीने का कोई लाभ नही हानि ही हानि है वैसे ही इन पुराणों को पढ़नें व अन्धपरम्पराओं का शिकार होने में हानि ही हानि है। ऋषि दयानन्द जी ने अपने ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश में मूर्ति पूजा को पाप कहा है, क्योंकि यह वेद विरूद्ध है और इसमें १६ प्रकार की हानियाँ गिनाई गईं हैं। पुराणों के बारे में ऋषि लिखते हैं कि इन पुराणों के लिखने वाले गर्भ में ही क्यों न मर गएं! सन्त कबीर, नानक, महात्मा मंगतराम, राजा राम मोहन राय एवं समस्त वेदों, उपनिषदों, दर्शनों ने मूर्तिपूजा की कड़े शब्दों में निन्दा की है। भागवत् स्कन्ध १० अध्याय ८४ श्लोक १३ में मूर्ति पूजकों को गऊओं के बीच गधे के तुल्य कहा है।

प्रश्न ३३ निराकार ईश्वर की पूजा कैसे हो सकती है ?

उत्तर जड़ पदार्थों की पूजा का अर्थ है उससे पूरा-पूरा लाभ उठाना । जैसे पृथिवी माता की पूजा का अर्थ है पृथिवी के वातावरण को शुद्ध रखना, इस पर बहने वाली नदियों को गंदा न करना, इसके चारों ओर बहने वाली वायु को गंदा न करना, इसके गर्भ में छिपे भंड़ारों का अनावश्यक दोहन न करना, इसके चप्पे चप्पे को उपजाऊ बनाकर उसका लाभ लेना । ऐसे ही अन्य जड़ पदार्थों के बारे में जान लीजिए । माता-पिता गुरु आचार्य राजा भाई बहिन आदि चेतन की पूजा का अर्थ है उनका सत्कार करना और उनकी आज्ञाओं का पालन करना । इसी प्रकार ईश्वर की पूजा का अर्थ है वेद में वर्णित उसकी आज्ञाओं व शिक्षाओं को जानना व उन्हें व्यवहार में लाना । ईश्वर की पूजा का दूसरा भाग है प्रातः सायं आसन लगाकर, प्राणायाम कर उसके पवित्र ओम् नाम का अर्थ सहित चिन्तन करना । निराकार ईश्वर की इस प्रकार पूजा बड़ी सुगम और सही है। शेष सब मात्र कल्पनाएं हैं ।अविद्या एवं रागद्वेष से रहित होकर ईश्वर के स्वरूप का चिन्तन ही ईश्वर पूजा है ।

प्रश्न ३४ ईश्वर का स्वरूप क्या हैं ?

उत्तर ईश्वर सच्चिदानंदस्वरूप है, इसके अतिरिक्त निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वन्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र सृष्टिकर्त्ता,

सृष्टिधर्ता, सृष्टिहर्ता, मोक्षदाता, अद्वैत, शुद्ध, बुध, मुक्त, गुरुओं का गुरू, सर्वज्ञ व सब प्रकार के क्लेशों से रहित है।

प्रश्न ३५ ईश्वर से हमारा क्या सम्बन्ध है ?

उत्तर ईश्वर हमारा पिता है हम उसके पुत्र हैं
ईश्वर हमारी माता है हम उसके पुत्र हैं
ईश्वर हमारा गुरु है हम उसके शिष्य हैं
ईश्वर हमारा राजा है हम उसकी प्रजा हैं
ईश्वर हमारा उपास्य है हम उसके उपासक हैं
ईश्वर व्यापक है हम व्याप्य हैं
ईश्वर हमारा स्वामी है हम उसके सेवक हैं

प्रश्न ३६ ईश्वर व्यापक है हम व्याप्य हैं–इसका क्या अर्थ है ?

उत्तर ईश्वर सर्वाधिक सूक्ष्म होने कारण प्रत्येक वस्तु में ओत प्रोत हो रहा है वह परमाणुओं और आत्माओं में भी ओत–प्रोत हो रहा है। जिस प्रकार रूई का गोला जल में डुबा दिया जाए तो जल उसके भीतर जाकर सर्वत्र व्याप्त हो जाता है इसी प्रकार हम जीवात्माएं भी ईश्वर में डुबी हुई हैं, हमारा शरीर, हमारी पृथिवी, हमारा वायुमण्डल, हमारा सौर मण्डल, हमारी आकाश गंगा सब ईश्वर में डुबे हुए हैं और ईश्वर सब में ओत प्रोत हो रहा है।

प्रश्न. ३७ ईश्वर तो आनंदस्वरुप है तो प्रत्येक वस्तु या व्यक्ति आनंद स्वरूप क्यों नहीं हो जाती ?

उत्तर आनंद देना न देना ईश्वर के अधिकार क्षेत्र में है जो व्यक्ति अपने आप को उस आनंद का पात्र बना लेता है ईश्वर उसे अपना आनंद प्रदान करता है। प्रत्येक वस्तु

या व्यक्तिं में ओत-प्रोत होने का यह अर्थ नहीं कि प्रत्येक

वस्तु ईश्वर ही हो जाती है या ब्रह्म ही हो जाती है। जैसे अग्नि लोहे के गोले में प्रवेश कर जाती है तो चाहे देखने में लोहे का गोला अग्निस्वरूप दिखाई देता है परन्तु फिर भी वह अग्नि नहीं हो जाता, उसका अस्तित्व बना रहता है। उसी प्रकार सब में ओत-प्रोत होने पर भी प्रत्येक वस्तु का अस्तित्व यूं का त्यों बना रहता है। सर्वव्यापक होने के कारण कुछ लोग जीवात्माओं और प्रकृति की सत्ता से ही मना करते हैं और उन्होनें इसी आधार परअद्वैतमत खड़ा कर रखा है अर्थात सब भ्रम ही भ्रम है। द्वैत या दो का अस्तित्व नहीं है ।

प्रश्न ३८ अद्वैत मत के लाखों अनुयायी है क्या वे सब झूठे हैं ?

उत्तर किसी पक्ष में बहुमत का होना या अधिक लोगों का होना सच का कारण नहीं होता।अद्वैत का अर्थ है जो दो या दो से अधिक पदार्थों के संयोग से न बना हो । ईश्वर, जीवात्माएं और परमाणु दो या दो से अधिक पदार्थों के संयोग से नहीं बने हैं अतः ये तीनों अद्वैत है, तीनों की पृथक पृथक सत्ता है, तीनों अनादि है । तीनों के अपने अपने गुण हैं । अद्वैत का अन्य अर्थ ईश्वर एक और अद्वितीय भी है ।

प्रश्न ३९ ईश्वर, जीवात्माओं और प्रकृति इन तीनों में भेद को स्पष्ट करें—

उत्तर

ईश्वर	जीवात्माएं	प्रकृति (परमाणु)
१. सत्	सत्	सत्

२. चेतन	चेतन	जड़
३ अनन्त ज्ञान बल से युक्त ।	अल्प ज्ञान, बल से युक्त	ज्ञान बल से रहित
४. आनन्द से युक्त	आनंद से रहित	आनंद से रहित
५. क्लेशों से रहित	क्लेशों से युक्त	क्लेशों का कारण
६. कूटस्थ नित्य	कूटस्थ नित्य	परिणामी नित्य (प्रकृति से सृष्टि)
७. अनन्त गुणों से युक्त	अल्प गुण	अल्प गुण सत रज तम्
८. सर्वशक्तिमान	अल्प शक्तिमान्	शक्तिहीन (साम्यावस्था में)
९. आवागमन से रहित	आवागमन का शिकार	जड़
१०. सदा मुक्त	बन्धन में आता जाता	ईश्वर के अधीन
११. ईश्वर एक है नाम अनेक हैं	जीवात्माएं अंसख्य हैं। नाम–आत्मा, रूह, Soul, पुरुष आदि हैं	असंख्य हैं, नाम–प्रकृति, परमाणु, Primordial matter हैं।
१२. निराकार	निराकार	साकार परन्तु अति सूक्ष्म होने के कारण दिखाई नहीं देती
१३. स्थान नहीं घेरता	स्थान नहीं घेरती	स्थान घेरती है ।
१४. समय स्थान की दृष्टि से अनन्त	केवल समय की दृष्टि से अनन्त अर्थात अन्त नहीं होता	समय की दृष्टि से अनन्त
१५. विभु (व्यापक)	परिच्छिन	परिच्छिन
१६. सूक्ष्मतम	सूक्ष्मतर	सूक्ष्म

१४. सर्वज्ञ	अल्पज्ञ	अज्ञ (ज्ञानरहित)
१८. साध्य	साधक	साधन
१९. आग जला नहीं सकती, पानी गला नहीं सकता, हवा सुखा नहीं सकती, शस्त्र काट नहीं सकते ।	वही	वही
२०. प्रकृति सृष्टि व जीवात्माओं का अधिष्ठाता ।	किञ्चित मात्रा तक	—
२१. उत्पत्ति स्थिति प्रलय का कारण	—	—
२२. सृष्टि का निमित्त कारण ।	साधारण कारण या गौण निमित्त कारण	उपादान कारण
२३. कर्मफल, वेदज्ञान व मोक्षदाता	—	—

प्रश्न ४० हम संस्कृत पढ़े लिखे नहीं हैं और न ही व्यस्त जीवन में उसे सीखने पढ़ने का समय है आप कृपा करके ईश्वरीय वाणी वेद की शिक्षाओं को सार रूप में बता सकते हैं?

उत्तर ईश्वर के विधि-विधान का जानना आवश्यक है भाषा कोई भी हो। परन्तु ईश्वरीय वाणी वेद व अन्य ऋषि-मुनि कृत ग्रन्थों को अच्छी प्रकार समझने के लिए उनका आनंद लेने के लिए यदि संस्कृत भाषा सीखी जाए तो अच्छा है। विचारणीय है हम अंग्रेजी भाषा को सीखने के लिए

१५-२० वर्ष परिश्रम करते हैं परन्तु संस्कृत भाषा सीखने के लिए १५-२० मास या दिन भी लगाने को तैयार नहीं। जिन लोगों ने इसके महत्व को समझा है वे बड़ी उमर में भी सब कामकाज छोड़ कर इसके अध्ययन में लगे हैं। परन्तु जैसा हमने कहा कि ज्ञान होना आवश्यक है भाषा कोई भी हो। कुछ विद्वान होकर भी वेद की शिक्षाओं पर अमल नहीं करते। उनसे तो वे लोग अच्छे है जो अविद्वान हो कर भी सार रूप में शिक्षाओं को जानकर उन पर आचरण करते हैं। अतः आपकी सहायतार्थ वेद की सार रूप में कुछ शिक्षाएं इस प्रकार हैं :-

(१) ईश्वर, जीव प्रकृति को साध्य, साधक और साधन के रूप में भली प्रकार जानकर व्यवहार करना।

(२) सब कार्य ईश्वर की प्राप्ति के लिए करना करवाना।

(३) मन वाणी व शरीर से किसी को किसी प्रकार का कष्ट न देना, सबसे प्रीतिपूर्वक व्यवहार करना, न्याय और धर्म की रक्षा हेतु संघर्ष करते हुए भीतर प्रेम, करुणा और समता के भावों को बनाए रखना, सब काल में सब प्राणियों से वैरभाव छोड़ना, न्यायपूर्वक दण्ड देते हुए विचलित न होना। ईश्वर की न्याय व्यवस्था पर दृढ़ विश्वास रखना।

(४) सदैव सत्य और प्रिय बोलना।

(५) किसी प्रकार की चोरी आदि न करना, किसी के अधिकारों का हनन न करना।

(६) मन व इन्द्रियों को अपने वश में रखना।

(७) आवश्यकता से अधिक वस्तुओं या अनावश्यक विचारों का संग्रह न करना । जो कुछ भी ईश्वर ने प्रसाद रूप में दिया है उसका सदुपयोग करना, सुपात्रों में उसका वितरण करना, आवश्यकतानुसार व धर्मानुसार ही उसमें वृद्धि करना ।

(८) प्रतिदिन व्यायाम, योगासन, स्नान, अल्पमात्रा में शुद्ध सात्विक भोजन, उपवास, सत्संग, स्वाध्याय व यज्ञादि से अपने मन, शरीर और वातावरण को शुद्ध और पवित्र करना ।

(९) अपने लौकिक एवं पारलौकिक लक्ष्य मोक्ष को प्राप्त करने के लिए पूर्ण पुरुषार्थ करना उसका जो भी फल मिले उसमें सन्तुष्ट रहना, निराश बिल्कुल नहीं होना।

(१०) भूख प्यास, गर्मी सर्दी, लाभ हानि, मान अपमान, निन्दा स्तुति हर्ष शोक, न्याय अन्याय, उतार चढ़ाव, वंसत पतझड़ आदि प्रत्येक अवस्था को अनित्य जान कर विचलित न होना, तितिक्षु बनकर रहना, तपस्वी बनकर रहना, समता में रहना, धैर्यवान बन कर रहना,

(११) मोक्ष आदि शास्त्रों व उपदशों का श्रवण, मनन, निदिध्यासन और साक्षात्कार करना अर्थात सब प्रकार मनन चिन्तन कर शंकाओं को दूर कर जीवन में उतारना, आत्म निरीक्षण के द्वारा अपने सूक्ष्म से सूक्ष्म दोषों को जान कर दूर करना, ईश्वर के सर्वोत्तम नाम ओम् का सतत चिंतन करते रहना, सब कार्य उसको साक्षी मानकर कर करना, सदैव उसकी आज्ञा पालन में रहना ।

(१२) ईश्वर की दिव्य रचना और उसके द्वारा किए जा रहे बेजोड़ उपकारों का चिन्तन कर उसके प्रति विश्वास और प्रेम को दृढ़ करना। आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार धारणा, ध्यान, समाधि का दीर्घकाल तक, निरन्तर, विद्यापूर्वक, तप-पूर्वक, ब्रह्मचर्यपूर्वक, श्रद्धापूर्वक अभ्यास करना।

(१३) सत्य के ग्रहण और असत्य के छोड़ने में सदैव तत्पर रहना।

(१४) अविद्या का नाश एवं विद्या की वृद्धि करना।

(१५) निष्कामभाव से अर्थात् अनासक्त भाव से परिवार, समाज व राष्ट्र की शारीरिक, आत्मिक व सामाजिक उन्नति करना, परोपकार के कार्यों मे संलग्न रहना।

प्रश्न ४१ तीन पदार्थ अनादि हैं ईश्वर जीव और प्रकृति। क्या ईश्वर और जीवात्माएं भी पदार्थ हैं ?

उत्तर जिसके आश्रय गुण रहते हैं उसे वस्तु, पदार्थ या चीज कहते हैं। ईश्वर के आश्रय, ज्ञान, बल आनन्द रहते है, जीवात्माओं के आश्रय, इच्छा, द्वेष, प्रयत्न ज्ञान रहते हैं— इसलिए ये पदार्थ हैं।

प्रश्न ४२ ईश्वर तो निराकार है, उसके साक्षात्कार से क्या अभिप्राय है?

उत्तर साक्षात्कार का अर्थ है उसके गुणों का अनुभव होना, प्रत्यक्ष होना। प्रत्यक्ष केवल आंखों से ही नहीं, कानों से,नाक से, जिह्वा से, त्वचा से भी होता है जैसे यह गीत सुन के देखो, अमुक फूल सुंघकर देखो, अमुख फल चख कर देखो, अमुक वस्तु छू कर देखो। देखो शब्द का

प्रयोग अन्य इन्द्रियों द्वारा प्राप्त ज्ञान के कारण भी प्रयोग होता है । सुख दुःख का ज्ञान मन रूपी आन्तरिक इन्द्रिय द्वारा होता है । इसी प्रकार ईश्वर के ज्ञान,बल आनन्द आदि गुणों का प्रत्यक्ष, साक्षात्कार या अनुभव आत्मा द्वारा होता है । यही ईश्वर का साक्षात्कार है । साकार रूप में तो ईश्वर दिखाई ही नहीं दे सकता । हां उसकी साकार सृष्टि को देखकर उसका अनुभव होता है । मन इन्द्रियों से गुणों का प्रत्यक्ष होता है और उसी के आधार पर हम वस्तु का प्रत्यक्ष करते हैं ।

प्रश्न ४३ आत्मा और प्रकृति का साक्षात्कार कैसे होता है ?

उत्तर अनुमान के आधार पर और समाधि के द्वारा । हम सदैव यहीं कहते हैं कि मेरा मकान, मेरा सिर, मेरा हाथ । यह 'मेरा' शब्द का प्रयोग अन्दर बैठा आत्मतत्व ही तो कर रहा है । समाधि के द्वारा इसका स्पष्ट अनुभव होता है ।

प्रश्न ४४ लोग बाईवल, कुरान, गीता, ग्रन्थसाहिब आदि को भी ईश्वरीय वाणी कहते हैं, हम किस की बात सच मानें ?

उत्तर ईश्वरीय वाणी होने में निम्न शर्तों को पूरा करना आवश्यक है :-

(१) ईश्वरीय वाणी सृष्टि के आदि में हो ।
(२) ईश्वरीय वाणी सब मनुष्यों के लिए हो ।
(३) ईश्वरीय वाणी ऐसी भाषा में हो जिसे सीखने के लिए सब मनुष्यों को एक जैसा परिश्रम करना पड़े ।
(४) ईश्वरीय वाणी से सब प्रकार का ज्ञान-विज्ञान हो ।
(५) ईश्वरीय वाणी ईश्वर के गुण कर्म स्वभाव अनुसार हो ।

(६) ईश्वरीय वाणी सृष्टि के क्रम व नियमानुसार हो ।
(७) ईश्वरीय वाणी में कोई इतिहास न हो ।
(८) ईश्वरीय वाणी होने का स्वयं ईश्वर ने साक्ष्य किया हो ।
(९) ईश्वरीय वाणी समस्त शंकाओ से दूर हो ।
(१०) ईश्वरीय वाणी में सब प्रकार की उन्नति के उपाय बताए गए हों ।
(११) ईश्वरीय वाणी में कोई परिवर्तन न हो, शाश्वत एक रस हो ।

ये सभी शर्ते केवल वेद ही पूरी करता है । अन्य ग्रन्थ इन सभी शर्तों को पूरा करने में असमर्थ है । किसी ग्रन्थ के प्रवकता ने अपने वाणी को ईश्वरीय कहने का साहस भी नहीं किया। पूर्वजन्म के संस्कारों के कारण अथवा योग में विशेष गति होने के कारण कुछ महापुरुषों ने ईश्वर की शिक्षाओं को अपनी अपनी मातृभाषा में कहा है। उन महापुरुषों के भक्तों ने उनके वचनों को संग्रह करके ग्रन्थ बनाए है जो उनके नाम से ही जानने चाहिएं।

प्रश्न ४५ कुछ लोग कहते हैं वेद गडरियों के गीत हैं और उनमें यज्ञों, पशुवलि आदि का विधान है यह कहाँ तक सच है?

उत्तर वेद मन्त्रों का उच्चारण आम जनता में बड़ा प्रिय था, गडरिये भी वेद मन्त्रों का गायन बडे चाव से करते थे इससे तो यही सिद्ध होता है किसी काल में वेद जन जन की भाषा थी और लोग वेदों का बड़ा आदर करते थे। इस रूप में वेदों को गडरियों के गीत कहना गौरव की ही बात है परन्तु इसका यह अर्थ लेना कि वेद अनपढ़ गंवारो के

गीत थे- नितान्त मूर्खता है। वेदों 'मे' पशुबलि भी कोरी गप्प है । वेद हर प्रकार की हिंसा से दूर रहने का उपदेश करते हैं। यज्ञ जैसे पवित्र कर्मों में पशुवलि का विधान मानना भी मूर्ख गंवार लोगों का कामं है। वेदों में ईश्वर ने अश्वमेध यज्ञ एंव गोमेधयज्ञ करने का उपदेश किया है जिसका अर्थ है अपनी इन्द्रियों को वश करना न कि घोडे या गाय को काट कर हवन अग्नि में डालना। संस्कृत में एक शब्द के अनेक अर्थ होते हैं अन्य भाषाओं में भी ऐसा पाया जाता है प्रकरण अनुसार शब्दों का अर्थ लेना बुद्धिमानों का काम है । अर्थ का अनर्थ करना मूर्ख लोगों का काम है ।

प्रश्न ४६ ईश्वर के मुख्य कार्य क्या हैं ?

उत्तर
- ईश्वर सृष्टि की रचना करता है ।
- ईश्वर सृष्टि का पालन करता है ।
- ईश्वर सृष्टि का संहार करता है ।
- ईश्वर सृष्टि के आदि में वेदों का ज्ञान देता है ।
- ईश्वर अच्छे बुरे कर्मों का फल देता है ।

प्रश्न ४७ यज्ञों में सैकड़ों हजारों लाखों रूपयों का घी और सामग्री जलाई जाती है इसका क्या लाभ है ?

उत्तर जैसे एक चम्मच मिर्च खाने से खाने वाले व्यक्ति पर ही प्रभाव पड़ता है, यदि उसे अग्नि में डाल दिया जाए तो सैकडों हजारों लोगों को प्रभावित करेगी । इसी प्रकार एक चम्मच घी खाने वाले व्यक्ति को प्रभावित करेगा उसे यदि आग में डाल दिया जाए तो सूक्ष्म होकर दूर-दूर तक

फैलेगा और बहुत लोगों को प्रभावित करेगा । यज्ञ में

डाली सामग्री व घी हजारों लाखों को प्रभावित करती है, पौष्टिकता प्रदान करती है स्वास्थ्य लाभ देती है अनेक रोगों को दूर करती है, वायु को शुद्ध करती है । यज्ञ करने से उत्पन्न होने वाली लाभदायक गैसें इस प्रकार हैं- एथीलीन आक्साईड, प्रापीलीन आक्साईड, प्रापलीटोन, फारमैलडी हाईड, एसीटीलीन । वर्तमान में पर्यावरण प्रदुषण को दूर करने का एक मात्र उपाय दैनिक यज्ञ और संस्थाओं व सरकारों द्वारा बड़े-बड़े यज्ञों का आयोजन करना है । यज्ञ की राख तक दवाइयों में प्रयोग होने लगी है । यज्ञ के साथ वेद मन्त्रों का उच्चारण करने से वेदों की रक्षा होती है, फेफडों का व्यायाम होता है, मन आत्मा पर अच्छे संस्कार पड़ते हैं, परिवार में प्रेम, एकता, शांति का विकास होता है ।

प्रश्न ४८ योग से क्या अभिप्राय है ? आधुनिक युग में योगासनों का बडा प्रचलन हो रहा है क्या यही योग है ?

उत्तर योगासन योग नहीं है। योग का अर्थ हैं समाधि द्वारा ईश्वर का साक्षात्कार कर मुक्ति का अधिकारी बनना, योगासन तो शरीर को स्वस्थ रखने के लिए व्यायाम हैं उनका अपना महत्व है और नियमित रूप से कुछ आसन प्रातःसायं करने चाहिए । स्वस्थ-शरीर से ही समाधि का अभ्यासं हो सकता है । पतज्जलि ऋषि जी को योग विद्या पर पूर्ण अधिकार था । उन्होंने लोक कल्याणार्थ योग की विधि बताई है जो सक्षेपतः इस प्रकार है :-

यम नियमों (प्रश्न संख्या ४०) के पालन, ईश्वर-जीव-

प्रकृति के यथार्थ ज्ञान और अविद्या अर्थात विपरित ज्ञान को हटाने से मनुष्य में विवेक अर्थात समझ उत्पन्न होती है कि संसार के प्रत्येक सुख में चार प्रकार का दुःख (परिणाम, ताप, संस्कार, गुण वृतिविरोध) मिला रहता है अतः त्यागने योग्य है और सब दुःखों से छूटने के लिए ईश्वर का साक्षात्कार ही एक मात्र उपाय है । इस तरह विवेक दृढ होने पर व्यक्ति के भीतर देखे सुने विषयों के प्रति राग हट जाता हैं जिसे अपर वैराग्य कहा गया है । अपर वैराग्य की स्थिति दृढ़ होने पर व्यक्ति सम्प्रज्ञात समाधि को प्राप्त होता है जिसमें ५-स्थूल भूत, ५ सूक्ष्म भूत, ज्ञानेन्द्रियों-कर्मन्द्रियों, एवं प्रकृति व आत्मा का साक्षात्कार होता है । इस अवस्था का अभ्यास करते करते साधक का इससे भी मोह भंग हो जाता है अर्थात सम्प्रज्ञात में सत्वगुण का प्रभुत्व होने से जो सुख मिल रहा होता है उससे भी तृष्णा समाप्त हो जाती है । इस अवस्था को पर वैराग्य की स्थिति कहा गया है। इस स्थिति का अभ्यास करते करते साधक ईश्वर के आनन्द की अनुभूति करने लगता है इसे असम्प्रज्ञात समाधि कहा गया है, इसका अभ्यास करते धीरे धीरे सब संस्कार दग्धीबीजभावस्था हो प्राप्त हो जाते हैं इसे जीवनमुक्त अवस्था कहा गया है । साधक को लगने लगता है कि अब मेरा अगला जन्म नहीं होगा । जब तक शरीर में रहता हैं ओंरों को योगाभ्यास करवाता है व परोपकार करता है । शरीर के छूटने पर साधक नितांत मुक्ति को

प्राप्त कर जीवन को सफल कर लेता है ।

प्रश्न ४९ मुक्ति क्या हैं ?

उत्तर सब प्रकार के दुःखों से छूट कर एक परान्तकाल तक पूर्ण आनन्द में रहना, दुःख लेश मात्र भी न होना मुक्ति है ।

प्रश्न ५० मुक्ति में बिना शरीर के आनंद कैसे भोगता है ?

उत्तर मृत्यु उपरान्त स्थूल शरीर को जला दिया जाता है । जब तक जीव अपने आप को मुक्ति का अधिकारी नहीं बना लेता तब तक वह सूक्ष्म शरीर में लिपटा हुआ भिन्न योनियों मे भटकता रहता है, इस सूक्ष्म शरीर के दो भाग होते हैं भौतिक और अभौतिक, भौतिक भाग में १८ प्रकार के तत्व होते हैं (५-सूक्ष्म भूत+ ५-ज्ञानेन्द्रियां + ५कर्मेन्द्रियां+ मन बुद्धि अहंकार) अभौतिक भाग में २४ प्रकार की शक्तियां होती हैं । मुक्त अवस्था में सूक्ष्म शरीर का भौतिक भाग छूट जाता है परन्तु अभौतिक भाग बना रहता है जिसके सहारे मुक्तात्मा मुक्ति का आंनद भोगती है और देखने सुनने सूंघने, वार्तालाप आदि करने के सब कार्य करती है । बन्ध अवस्था में जैसे शरीर के सहारे सुख भोगता है वैसे मुक्त अवस्था में ईश्वर के सहारे सुख भोगता है ।

प्रश्न ५१ कितने समय तक जीव मुक्ति में रहता है अथवा सदैव के लिए मुक्त हो जाता है ?

उत्तर जीव अल्पशक्तिमान है उसका सामर्थ्य भी अल्प है सदैव के लिए मुक्ति का आनन्द भोगने का उसका सामर्थ्य नहीं और न ही सीमित साधनों का फल असीमित हो सकता

है अर्थात जिन साधनों से जीव मुक्ति प्राप्त करता है वे साधन भी तो सीमित है । कुछ कर्म भी उसके शेष रह गए होते हैं जिन का फल भोगने के लिए जीव पुनः माता पिता के गर्भ में आता है । जैसा ऊपर बताया है कि जीव एक परान्तकाल तक मुक्ति का सुख भोगता है। परान्तकाल= २,८८००० अरब वर्ष = ३१ नील १० खरब ४० अरब वर्ष= ३६००० बार सृष्टि उत्पत्ति प्रलय समय । इतने महान सुख के लिए प्रयास न करना या उसके बारे में ज्ञान ही न होना बडे दुर्भाग्य की बात है ।

प्रश्न ५२ मुक्ति में जीव एक स्थान में रहता है या घूमता रहता है?

उत्तर मुक्ति में जीव अव्याहत गति से घूमता रहता है जब चाहे जहां चाहे जा सकता है । मंगल बुध शुक्र ग्रह, व अन्य सौर मण्डलों व अन्य आकाश गंगाओं में स्वच्छन्द घूम सकता हैं; अन्य मुक्त आत्माओं से वार्तालाप कर सकता है । बुद्ध, नानक, राम, कृष्ण, शिव, दयानंद आदि यदि मुक्त हैं तो उनसे भी मिल सकता है ।

प्रश्न ५३ मुक्ति एक जन्म में होती है या अनेक जन्मों में ?

उत्तर मुक्ति अनेक जन्मों के प्रयास के पश्चात होती है । १०जन्मों के १००० वर्ष भी मानें और पश्चात् मुक्ति मिल जाए तो बडे सौभाग्य की बात है। १००० वर्षों के परिश्रम के फलस्वरूप २,८८००० अरब वर्ष का सुख बडे ही लाभ का पुरुषार्थ है ।

प्रश्न ५४ कुछ कहते हैं कि मुक्ति में जीव का लय हो जाता है ।

उत्तर यह मिथ्या कल्पना है, लय होना प्रलय होना एक ही बात

है यदि जीव परमेश्वर में लय हो जाता है अर्थात इसका अस्तित्व समाप्त हो जाता है तो मुक्ति के लिए किया सब पुरुषार्थ ही विफल हो जाएगा । अतः वास्तविकता यही है कि मुक्ति में जीव का अस्तित्व बना रहता है । जीवात्मा कभी क्षय या लय को प्राप्त नहीं होती वह अजर है अमर है ।

प्रश्न ५५ मुक्ति प्राप्त करने का क्या कोई सरल उपाय नहीं है ? योगाभ्यास व समाधि कठिन प्रतीत होती है ?

उत्तर मुक्ति प्राप्त करने का अन्य कोई सरल मार्ग नहीं है । अभ्यास करने से कठिन से कठिन कार्य भी सरल हो जाता है । लोक में डाक्टर, इंजीनियर, वकील, आई. ए. एस. अधिकारी या नेता आदि बनने के लिए व धन कमाने के लिए जिंदगी भर परिश्रम करते हैं परन्तु पूर्ण सुख फिर भी नहीं मिलता । रोग, शोक बुढ़ापा, मृत्यु, अन्याय, अत्याचार भ्रष्टाचार, आधिभौतिक आधिदैविक, आध्यामित्क आदि नाना प्रकार के दुःख उसको सताते रहते हैं । मोक्ष प्राप्ति का मार्ग बडा सीधा, सरल और सर्वोत्तम है । संसार में फंसे रहने के कारण व इन्द्रिय भोगों के आकर्षण जीव को अपने चरम लक्ष्य मोक्ष को प्राप्त करने नहीं देते। समझदार विवेकी पुरुष ही इनको त्याग कर दृढ़ता से मोक्ष के लिए प्रयास करता है । संसार में बहुत लोग सस्ते में मुक्ति का लालच देकर अपना उल्लु सीधा करते हैं । राम-राम, कृष्ण-कृष्ण करने से, गगां स्नान करने में, चौथे आसमान, सातवें आसमान, गोलोक, परमधाम, शिवपुरी आदि स्थानों में जाने से मुक्ति मानना स्वयं को ही धोखा देना है ।

प्रश्न ५६ मुक्ति के वास्तविक साधन क्या क्या है ?

उत्तर वास्तविक साधन तो प्रश्न ४८ के उतर में बताए योगाभ्यास के द्वारा ही हैं परन्तु उसके अतिरिक्त अन्य साधनों को अपनाना भी आवश्यक है :-

विद्या-अविद्या का यथार्थज्ञान, योगाभ्यास, परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन, ५-महायज्ञ, निर्धन-अनाथ-विधवाओं व रोगियों की सेवा, अन्धविश्वासों-पांखडों को दूर करना इत्यादि उत्तम कर्म, सत्संग, विवेक, वैराग्य, अभ्यास, षट्सम्पति, मुमुक्षुत्व की भावना, श्रवण चतुष्टय, अधिकारी चतुष्टय आदि साधनों का सूक्ष्मता से पालन करना होता है ।

प्रश्न ५७ इसमें क्या प्रमाण हैं की जीव का बार-बार जन्म होता है, व पशुपक्षियो की योनियों में भी जाता है ।

उत्तर वेदादि शास्त्रों के अनेक प्रमाण हैं आधुनिक युग में वैज्ञानिकों व डाक्टरों द्वारा लिखी पुस्तकों में वर्णित सिद्धान्तों को हम अक्षरशः सत्य मान कर चलते हैं तो निःस्वार्थ, योगी, सत्यवादी, परोपकारी ऋषियों की वाणी को सत्य मान कर क्यों नही चलते ? यह सब पाश्चात्य सभ्यता व स्कूल कालिजों में अध्यात्मिक शिक्षा के अभाव के कारण है । तर्क बुद्धि से काम लें तो भी पुनर्जन्म स्पष्ट दिखाई देता है । एक ही समय पर अनेक बच्चे पैदा होते हैं कोई साहूकार के घर में कोई दरिद्र के घर में । क्या कारण है कि एक को तो जन्म लेते ही कोठी, कार, सोना, चाँदी, पद, प्रतिष्ठा आदि की सब सुविधाएं प्राप्त हो गई

और दूसरे को पीने को दूध तक नसीब नहीं, दोनों के भाग्य में इतने बड़े अन्तर का जो कार्य हुआ है उसका क्या कारण है ? अवश्य ही पूर्व जन्म में किए कर्मों का फल है। बिना कारण के कार्य कभी नहीं होता। ऐसी मोटी बुद्धि वालों के लिए परमात्मा कई बार ऐसे बच्चों को जन्म देता है जिन्हें अपने पूर्व के जन्म की याद बनी रहती है। ऐसी अनेक घटनाएं रिकार्ड में आ चुकी हैं। आत्मा की कोई जाति या लिंग नहीं होता। जैसे कर्म वैसे ही कर्मफल के रूप में जाति-आयु भोग प्राप्त होते हैं। निष्काम कर्म ही मुक्ति दिला सकते हैं ।

प्रश्न ५८ कर्म, कर्मफल व निष्काम कर्म को स्पष्ट करें ?

उत्तर सुख की प्राप्ति और दुख की निवृत्ति के लिए जीवात्मा मन, वाणी व शरीर से जो चेष्टा विशेष करता है वह कर्म है । कर्म चार प्रकार के होते हैं :-

शुभ, अशुभ, मिश्रित व निष्काम

(क) शुभ = शरीर से रक्षा, दान, सेवा । सत्य, मधुर, हिंतकर, सार्थक बोलना वाणी से । दया, अस्पृहा, आस्तिकता मन से ।

(ख) अशुभ = शरीर से हिंसा, चोरी, व्यभिचार, वाणी से झूठ, निन्दा, कठोर, व्यर्थ बोलना; मन से द्रोह, स्पृहा, नास्तिकता ।

(ग) मिश्रित = खेती करना, नौकरी करना, व्यापार करना आदि ।

(घ) निष्काम = कर्तव्य भावना से ईश्वर की आज्ञा के अनुरूप और ईश्वर प्राप्ति को लक्ष्य बनाकर उपासना आदि कर्म, परोपकार आदि कार्य।

शुभ-अशुभ व मिश्रित कर्मों को सकाम कर्म भी कहते हैं इनसे मिलने वाले फल जाति आयु भोग के रूप में होते हैं। जो कर्म इसी जन्म में फल देने वाले होते हैं उन्हें दृष्टजन्मवेदनीय और जो कर्म अगले किसी जन्म में फल देने वाले होते हैं वे अदृष्टजन्मवेदनीय कहते हैं। दृष्टजन्मवेदनीय कर्म जाति रूप फल को देने वाले नहीं होते क्योंकि जाति (योनि) जो इस जन्म में मिल ही चुकी होती है। पुरुषार्थ से धन, सम्पति, भोग या आयु अथवा दोनों को बढाया जा सकता है या प्रमाद से घटाया जा सकता है। अदृष्टजन्मवेदनीय कर्म कुछ तो नियत विपाक के रूप में जाति आयु भोग देते हैं, कुछ अनियत विपाक वाले होते हैं जो या तो नष्ट हो जाते हैं (मुक्ति से लौटने पर) या किसी के साथ मिलकर फल देते हैं या दवे रहते हैं। दबे रहने का अर्थ है तब तक फल नहीं देते जब तक उन्हीं के सदृश किसी मनुष्य शरीर में मुख्य कर्म न कर लिये जावें। जिन कर्मों की प्रधानता होती है उनके अनुसार अगला जन्म मिलता है। सकाम कर्म का फल अच्छा या बुरा होता है, निष्काम कर्म सदा अच्छे ही होते हैं उनका फल ईश्वरीय आनंद की प्राप्ति के रूप में होता हैं जिसे समाधि अवस्था एवं मोक्ष अवस्था में भोगा जाता है।

कर्माशय- अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष अभिनिवेश-५ कलेशरूपीमूल

क्लेशमूलः कर्माशयो दृष्टादृष्ट जन्मवेदनीयः योग दर्शन २–१२
सति मूले तद्विपाको जात्यायुर्भोगाः योग दर्शन २–१३
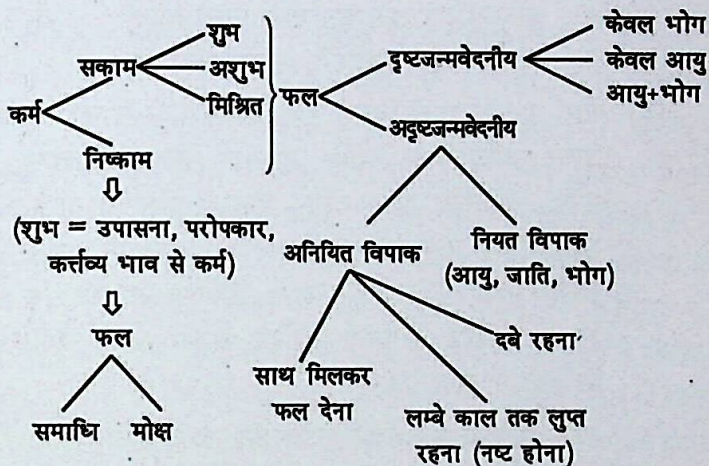
प्रश्न ५९ योग में रूचि उत्पन्न न होने के क्या कारण हैं, सब कुछ जानते हुए भी व्यक्ति भोग विलास व सांसारिक कार्यों को ही प्राथमिकता क्यों देता है ?

उत्तर इसके कारण हैं :

(१) पढे सुने पर अच्छी तरह मनन न करना। विद्या प्राप्ति के लिए और उसे जीवन में उतारने के लिए श्रवण, मनन, निदिध्यासन व साक्षात्कार की विधि को अच्छी तरह न अपनाना।

(२) योग के लाभों के प्रति अनभिज्ञ बने रहना। जो निम्न प्रकार हैं :—

✧ मोक्ष की प्राप्ति

- ✧ ऋतम्भरा बुद्धि की प्राप्ति

- ✧ कुसंस्कारों का नाश, सुसंस्कारों का प्रगट होना
- ✧ स्मृति में उल्लेखनीय वृद्धि
- ✧ आत्मसाक्षात्कार कर जीवनमुक्त बनना
- ✧ मन इन्द्रियों का स्वामी, कृतज्ञता का भाव

(३) योग में आने वाले विघ्नों उपविघ्नों को दूर न करना । विघ्न उपविघ्न = व्याधि, सत्यान, संशय, आलस्य, प्रमाद, अविरति, भ्रान्तिदर्शन, अलब्धभूमिकत्व अर्थात् समाधि का प्राप्त न होना, अनवास्थितत्वानि अर्थात समाधि प्राप्त करके खो देना, दुःख, दौर्मनस्य, अङ्गमेजयत्व, श्वास-प्रश्वास, स्थानीय उपनिमन्त्रण में आना जाना, सिद्धियों में उलझ जाना ।

(४) अपने कर्त्तव्यों की अवहेलना करना, कर्तव्य जैसे :-

जीवन का परम लक्ष्य ईश्वर साक्षात्कार करना करवाना, यम-नियमों का सूक्ष्मता से पालन, दिनचर्या में अनुशासन, आप्त पुरुषों के वचन पर विश्वास, तपस्वी होना, शुद्ध व्यवहार, वाणी सत्य व मधुर, सम्मान की इच्छा न करना, प्रत्येक कार्य ईश्वर प्राप्ति के लिए, प्रत्येक विषय ईश्वर का, जनक की तरह पात्रता, स्वय कष्ट उठाकर दूसरों को सुख पहुँचाना, अपने दोष और दूसरों के गुण देखना, भौतिक वस्तुओं का प्रयोग केवल शरीर रक्षा के लिए, अल्पमात्रा में शुद्ध भोजन, उपवास, हेय हेय-हेतु, हान, हानोपाय को समझना, जिज्ञासा भाव से गुरू से शंका समाधान । इन विघ्नों-उपविघ्नों को दूर करने के लिए ओम् जप का

आश्रय लें और सावधान रहें। सांसरिक व्यवहार में मैत्री, करूणा, मुदिता, उपेक्षा नियम का पालन करें।

प्रश्न ६० जब भी ध्यान मैं बैठने का प्रयत्न करते हैं न चाहते हुए भी मन सांसारिक विषयों की ओर दौड़ता है। मनको एकाग्र करने के लिए क्या करना चाहिए ?

उत्तर (१) सर्वप्रथम तो यह भली प्रकार से जानना होगा कि मन सत्व रज तम प्रकृति से बना एक जड़ पदार्थ है वह स्वयं विषयों की ओर नहीं दौड सकता। हम चेतन आत्मा ही उसको विषयों की ओर ले जाती हैं यह प्रक्रिया विद्युत की नाईं इतनी तीव्रता से होती है कि आभास होता है कि मन ही हमें विषयों की ओर दौडाता है। हमारी इच्छा के बिना हाथ पैर हिल नहीं सकते उसी प्रकार मन भी हमारी इच्छा के बिना कुछ नहीं कर सकता।

(२) दूसरा विवेक को प्राप्त करना होगा कि इन्द्रिय सुख में चार प्रकार का दुःख मिला रहता है और वे ही बन्धन का कारण हैं, संसार का कारण हैं, आवागमन का कारण हैं और मोक्ष सुख से पृथक रखने का कारण हैं।

(३) तीसरे प्राणायाम् नियमित रूप से प्रातः सायं विधिपूर्वक करें। जानते हुए इसकी उपेक्षा होती रहती है। कम से कम ३-४ से प्रारम्भ करके २१ प्राणायाम प्रातः सायं खुली ताजी हवा में खाली पेट करने की आदत डालें।

(४) चौथे आसन को दृढ़ करें ऐसा नहीं कि वर्षों बीत जाएं और १-२ घंटे का आसन सिद्ध ही न होने पाए।

प्रश्न ६१ चित्त की वृतियां और अवस्थाओं से क्या अभिप्राय है ?

उत्तर **५ प्रकार की वृतियां** — चित्त में उठने वाली सांसारिक वृत्तियों को पांच भागों में बांटा गया है :- प्रमाण (प्रत्यक्ष, अनुमान, आगम), विपर्यय (उल्टा ज्ञान-अविद्या), विकल्प (काल्पनिक ज्ञान), निद्रा, स्मृति । व्यवहार काल में इनसे काम लेना है परन्तु उपासना काल में सभी प्रकार की वृतियों को रोक कर केवल ईश्वर के गुण कर्म स्वभाव का चिन्तन करना । बस एक ही प्रकार के ज्ञान का प्रवाह बने रहना ।

५ प्रकार की अवस्थाएं — क्षिप्त, मूढ, विक्षिप्त, एकाग्र निरूद्ध, (चंचल, आलस्य/प्रमाद, मूर्च्छित, कुछ देर के लिए एकाग्र, पूर्ण एकाग्र), ज्ञान विज्ञान की प्राप्ति एकाग्र अवस्था में होती है इसे सम्प्रज्ञात समाधि था समापत्ति भी कहते हैं । पदार्थों के ज्ञान के आधार पर इसे वितर्क, विचार, आनंद, अस्मिता आदि चार भागों में बांटा गया है निरुद्ध अवस्था असम्प्रज्ञात समाधि में होती है ।

प्रश्न ६२ कुछ लोगों को बिना कुछ ज्ञान विज्ञान प्राप्त किए बाल्यकाल या युवावस्था में ही समाधि प्राप्ति हो जाती है ऐसा कैसे?

उत्तर पूर्वजन्म में ऐसे महापुरुषों ने ज्ञान विज्ञान व वैराग्य को प्राप्त करने के लिए घोर परिश्रम किया होता है। वर्तमान जीवन में कुछ अप्रिय या मृत्यु आदि की घटनाएँ या संसार में दुःख ही दुख देखकर पूर्वजन्म के संस्कार जागृत हो उठते है और पुनः तीव्र वैराग्य को प्राप्त होकर समाधि को प्राप्त होते हैं । परिष्कृट भाषा में योग का प्रचार-प्रसार करने के लिए उनको भी व्याकरण, दर्शन

आदि ग्रन्थों का स्वाध्याय करना पडता है। ऐसा अवसर या गुरु न मिले तो अपनी मातृभाषा में योग्यतानुसार प्रचार-प्रसार करते हैं जैसे कबीर, नानक, म० मंगतराम आदि।

प्रश्न ६३ शीघ्र समाधि प्राप्त करने की क्या कोई विधि है ?

उत्तर ईश्वर प्रणिधान अर्थात ईश्वर पर दृढ़ विश्वास व प्रेम अनुमान व शब्द प्रमाण से दृढ़ करें। दोनों प्रमाणों का गहराई से बार बार प्रतिदिन चिम्तन मनन करते रहें। ईश्वर के बेजोड उपकारों, रचनाओं, सम्बन्धों का भी बार-बार प्रतिदिन चिन्तन मनन कर उसके प्रति प्रेम को बढावें। श्रद्धा प्रेम से मग्न होकर धीरे-धीरे ईश्वर की महिमा का गुणगान भजनों, मन्त्रों व श्लोकों के माध्यम से प्रतिदिन करें। ऐसा करने से ईश्वर शीघ्र समाधि लगवाता है। ईश्वर में दृढ़विश्वास व प्रेम होने से उसकी आज्ञाओं का उल्लघंन नहीं होता।

प्रश्न ६४ जाति अथवा योनियां कितनी प्रकार की है ?

उत्तर कहा जाता है कि ८४ लाख योनियां हैं, परन्तु योनियां ८४ करोड़ भी हो सकती हैं समस्त योनियां को शास्त्रों ने चार भागों में बाट़ां है -

- जरायुज- गर्भ से उत्पन्न होने वाले मनुष्य पशु आदि।
- अण्डज- अण्डे से उत्पन्न होने वाले पक्षी कीट आदि।
- उद्भिज- पृथ्वी में से निकलते वाले पेड़, पौधे आदि।
- स्वदेज - पसीने आदि से उत्पन्न होने वाले-जूएं, गेहूं आदि में कीट-कीटाणु आदि।

प्रश्न ६५ ज्ञान के प्रकार, अवस्थाएं, प्राप्ति के प्रकार, क्षेत्र व पद्धति क्या हैं ?

(क) ज्ञान के प्रकार – ईश्वर, जीव, प्रकृति व सृष्टि के पदार्थों को ठीक ठीक जानकर उनसे उपकार लेना ।

(ख) ज्ञान की अवस्थाएं – अभावात्मक, संशयात्मक,भ्रमात्मक, निर्णयात्मक ।

(ग) ज्ञान प्राप्ति के प्रकार – शाब्दिक, अनुमानिक,प्रात्यक्षिक

(घ) ज्ञान के क्षेत्र – ईश्वर जीव, प्रकृति

(ङ) ज्ञान प्राप्ति की पद्धति/शैली – श्रवण, मनन, निदिध्यासन साक्षात्कार/आगमकाल, स्वाध्यायकाल, प्रवचनकाल, व्यवहार काल ।

प्रश्न ६६ ईश्वर साक्षात्कार से क्या-क्या नाश हो जाता है ?

तस्मिन् दृष्टे परावरे – ईश्वर का साक्षात्कार कर लेने पर

(क) भिद्यन्ते हृदयग्रन्थि – आत्मा की अविद्या का नाश हो जाता है ।

(ख) छिद्यन्ते सर्वसंशाया – सारे संशयों का नाश हो जाता है ।

(ग) क्षीयन्ते चास्य कर्माणि – सारे कुसंस्कारों का नाश हो जाता है ।

प्रश्न ६७ दुरात्मा और महात्मा के क्या लक्षण हैं । क्या भेद हैं ?

उत्तर दुरात्मा मन, वाणी, कर्म से एक नहीं होते हैं जबकि महात्मा एक होते हैं ।

दुरात्मा मनस्यन्यत, वचस्यन्यत् कर्मण्यन्यत्

महात्मा मनस्येकं, वचस्येकं कर्मण्येकं

प्रश्न ६८ योग दर्शन (पातञ्जल) का संक्षिप्त परिचय । भाष्य = व्यास ऋषि ?

उत्तर चार पाद, १९५ सूत्र, सार = यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा ध्यान समाधि-मुक्ति ।

प्रश्न ६९ सांख्य दर्शन (कपिल मुनि) का संक्षिप्त परिचय छः अध्याय, सूत्र (१६४+४७+८४+३२+१२९+७०=५२६) सार = २५ तत्वों (५सूक्ष्म भूत + ५ ज्ञानेन्द्रियां + ५कर्मेन्द्रियां + ५ स्थूल भूत+ सत्व, रज, तम प्रकृति + महतत्व, अहंकार, मन + आत्मा) के यथार्थ ज्ञान से विवेक - वैराग्य - मुक्ति ।

प्रश्न ७० न्याय दर्शन (गौत्तम) का संक्षिप्त परिचय :- अध्याय = ५, प्रत्येक अध्याय के दो आह्निक, सूत्रः ५३० प्रतिपाद्य विषय = प्रमाण। सार = १६ पदार्थों (प्रमाण, प्रमेय, संशय, प्रयोजन, दृष्टांत, सिद्धान्त अवयव, तर्क, निर्णय, वाद, जल्प, वितण्डा, हेत्वाभास, छल, जातिं, निग्रह स्थान) के तत्व ज्ञान से विवेक-वैराग्य-मुक्ति ।

प्रश्न ७१ मीमांसा दर्शन (पूर्व मीमांसा)का सक्षिप्त परिचय-महर्षि जैमिनि कर्म काण्ड के तत्व ज्ञान से मुक्ति ।

प्रश्न ७२ वेदान्त दर्शन (उत्तर मीमांसा) का संक्षिप्त परिचय (ब्रह्मसूत्र) महर्षि वादरायण व्यास कृत भाष्य = ब्रह्मा के तत्व ज्ञान से विवेक, वैराग्य मुक्ति । वेदान्त का अर्थ है वेद का अन्तिम सिद्धान्त-ब्रह्मा को जानना ।

प्रश्न ७३ वैशेषिक दर्शन का संक्षिप्त परिचय = महर्षि कणादकृत,

९ द्रव्य, २४ गुण, ५ कर्म, २ सामान्य (जाति), विशेष (अनन्त), समवाय (नित्य) ४, अभाव ये सात पदार्थों के तत्व ज्ञान से विवेक - वैराग्य - मुक्ति, धर्म का सच्चा स्वरूप जिससे भोग और अपवर्ग की प्राप्ति हो। द्रव्यादि पदार्थों के साधर्म्य-वैधर्म्य का वर्णन । सभी दर्शनों का मूल वेद है । सृष्टि विद्या के भिन्न भिन्न छः अवयवों का छः शास्त्रों में प्रतिपादन करने से उनमें कुछ भी विरोध नहीं जैसे घड़े के बनाने में कर्म, समय, मट्टी, विचार, संयोग वियोगादि का पुरुषार्थ, प्रकृति के गुण और कुंभार कारण हैं ।

(१) वैसे ही सृष्टि का जो कर्म कारण है उस की व्याख्या मीमांसा में ।
(२) सृष्टि का जो समय कारण है उस की व्याख्या वैशेषिक में ।
(३) सृष्टि का जो उपादान कारण है उस की व्याख्या न्याय में।
(४) सृष्टि का जो पुरुषार्थ कारण है उस की व्याख्या योग में।
(५) तत्वों के अनुक्रम से परिगणन की व्याख्या = सांख्य में ।
(६) सृष्टि का जो निमित है उस की व्याख्या वेदान्तशास्त्र में।

प्रश्न ७४ ग्यारह उपनिषदों का संक्षिप्त परिचय दीजिए ?

उत्तर १. ईशावास्योपनिषद - कुल मन्त्र १८, इस उपनिषद् ने स्वत्व, स्वामीपन की मान्यता को ठुकराया है । जो कुछ है सब भगवान का है उसे त्याग पूर्वक भोग करो । जितना भौतिक विज्ञान है उसे अविद्या कह कर उसका क्षेत्र सीमित कर दिया गया है । भोगने और त्यागने की, अविद्या तथा विद्या की, असम्भूति तथा सम्भूति (प्रकृति

और प्रकृति से बने पदार्थों) के समन्वय की बात कहता है । जो कुछ करो कर्त्तव्य समझ कर करो । अधिकार का तो प्रश्न ही नहीं उठता जब आप किसी भी वस्तु के स्वामी नहीं हो ।

२. केन-चार खण्ड हैं, (३+५+१२+९ = २९ मन्त्र हैं), मुख्य लक्ष्य ब्रह्मा की सत्ता तथा ब्रह्म विद्या का प्रतिपादन करना है । प्रथम खण्ड में प्रश्न उठाया गया है कि आंख, कान, वाणी आदि नहीं देखते, सुनते, बोलते तो इनके पीछे कौन देखता, सुनता और बोलता है ? दूसरे खण्ड में केन ऋषि ने उत्तर दिया है कि हम नहीं कह सकते वह कौन हैं, इतना निश्चय है कि शरीर से वह भिन्न है क्योंकि वह नहीं तो शरीर इन्द्रियां सब मट्टी रह जाती हैं । इतना ही कह सकते हैं कि वह है अवश्य।तृतीय खंण्ड में यह दर्शाया गया है कि जैसे पिण्ड में आंख, कान, वाणी अपनी अन्तस शक्ति के बिना कुछ नहीं कर सकते, वैसे एक उपाख्यान द्वारा यह दर्शाया गया है कि अग्नि, इन्द्र, वायु ये सब ब्रह्मा शक्ति के बिना सामर्थ्यहीन हैं । चतुर्थ खण्ड में केन ऋषि ने अपने कथन का उपसंहार किया है कि हम अन्धकार में पडे संसार की पूजा में संलग्न हैं, प्रभु सत्ता हम से ओझल हुई है परन्तु 'उमा'—बुद्धि-द्वारा ही हमें पता लगता है कि संसार में ओझल हो रही ब्रह्म शक्ति ही उपासनीय है। इसे यक्ष व वन आदि नामों से पूजा गया है । पूजा, उपासना के लिए तप, दम व कर्म से जीवन को साधना होगा । उमा शब्द का अर्थ ओम् भी है और यक्ष व वन शब्दों का अर्थ पूज्यनीय है ।

३. कठ = दो भाग, प्रथम भाग १-३ बल्ली, द्वितीय भाग ४-६ बल्ली, २९+२५+१७+१०+ १५+१८ = ११४ श्लोक क्रमशः प्रत्येक बल्ली में २९, २५, १७, १०, १५, १८ श्लोक हैं।प्रथम भाग में वाजश्रवा के पुत्र उद्धालक विश्वजित यज्ञ में अपना सब धन एवं बूढ़ी गऊओं को दान करने लगे तो उनके पुत्र नचिकेता ने सोचा कि मरणासन्न गौवों का दान करने वाला दात्ता तो नीच योनियों में जाता है । अतः पिता जी को सावधान करते हुए उनसे कहा आप मुझे किसको दोगे ? दो-तीन बार ऐसा पूछने पर पिता ने क्रोध में आकर कहा कि तुझे मैं यम को देता हूँ । नचिकेता मृत्यु के आचार्य यम के पास गया। यम घर में नही था, नचिकेता तीन रात भूखा प्रतीक्षा करता रहा। यम के आने पर उससे तीन वर माँगने को कहा । प्रथम वर में नचिकेता ने पिता की प्रसन्नता, दूसरे में स्वर्ग प्राप्ति के लिए अग्नि विद्या, तीसरे में मरने के बाद आत्मा रहता है या नहीं की जानकारी मांगी । यमाचार्य ने प्रथम दो वर तो प्रसन्नता पूर्वक दिए परन्तु तीसरे वर में आत्म तत्व के उपदेश हेतु उसकी पात्रता की परीक्षा लेना प्रारम्भ की। यमाचार्य ने कई प्रलोभन दिए । परन्तु नचिकेता अड़िग रहा । ब्रह्मविद्या का उत्तम अधिकारी जानकर यमाचार्य ने ब्रह्मविद्या का महत्व बताते हुए श्रेय मार्ग और प्रेय मार्ग का विवेचन किया और कहा कि अत्यन्त बुद्धिमान विरले लोग श्रेय मार्ग को अपनाते हुए आत्म तत्व को जानकर परमात्म आनंद में मग्न हो पाते हैं । इस विद्या को देने वाले भी बहुत विरले लोग होते हैं । मरने के बाद आत्मा

का अस्तित्व बना रहता है, आत्मा अजन्मा, नित्य और क्षय वृद्धि से रहित है, शरीर के नाश होने पर भी इसका नाश नहीं होता । आत्मा को जानकर ही मनुष्य उस परमानंद नाम पद को प्राप्त कर सकता है । जिसके लिए सब जप, तप, ब्रह्मचर्य का पालन किया जाता है और संपूर्ण वेद उसी का बारम्बार प्रतिपादन करते हैं, वह अक्षर ओम् ही परब्रह्म है । वह परमात्मा सूक्ष्म से अतिसूक्ष्म और महान् से भी महान है । परमात्मा की इस महिमा को कामना रहित, चिंता रहित कोई विरला ही परमेश्वर कृपा से देख पाता है । न बहुत प्रवचन से, न बुद्धि से, न बहुत सुनने से वह प्राप्त होता है जिसको वह स्वीकार कर लेता है उसके द्वारा ही प्राप्त किया जा सकता है । मन इन्द्रियों के संयम और शांत एकाग्र मन से ही उसे प्राप्त किया जा सकता है, हे नचिकेता! तुम जीवात्मा को शरीर रूपी रथ का स्वामी, बुद्धि को सारथि, मन को लगाम, इन्द्रियों को घोडे,विषयों को उन घोडों के विचरने का मार्ग समझो और अत्यन्त सावधान होकर इस रथ और घोडों का संचालन करो, इन्हें विषयों में मत जाने दो। साधकों को चाहिए कि उस शब्द रहित, स्पर्श रहित, रूप रहित, रस व गंध रहित, अनिवाशी, नित्य, अनादि, अनंत, महान् परमात्म तत्व को जानने के लिए उठें, जागें और श्रेष्ठ महापुरुषों के पास जाकर उसे जान लें क्यों कि यह मार्ग छुरे की तीक्ष्ण की हुई धार के समान दुर्गम है । द्वितीय भाग :- इस भाग में यमाचार्य द्वारा आत्मा परमात्मा का आगे वर्णन किया गया है। जिस आत्म तत्व/परमातत्व

के बारे में नचिकेता ने पूछा था वह कैसा है ? इस पर प्रकाश डालते हुए यमाचार्य कहते हैं कि आत्मा-परमात्मा दोनों अशब्द, अस्पर्श, अरूप; अव्यय, मध्वद, अदिति, अंगुष्ठ मात्र, हैं । उनको देखने के लिए इन्द्रियों विशेषकर आंखो को भीतर की ओर मोडने की आवश्यकता है। जैसे अरणियों से अग्नि को पाने के लिए उन्हें रगडने की आवश्यकता है ऐसी ही हृदय रूपी गुहा में परमेश्वर रूपी अग्नि/आंनद को प्रगट करने के लिए जप तप संयम की आश्यकता है । उसका दर्शन इन्द्रियों से नहीं अपितु मन से और अनेकता में एकता अर्थात सब में उसी का नूर देखने से होता है । वह परमात्मा धूम्ररहित ज्योति की भांति है, और भूत वर्तमान भविष्य पर शासन करने वाला, सनातन स्वयंभू, स्वयं परिपूर्ण, स्वयं आप्त शक्ति है । किसी पर निर्भर नहीं हैं । जैसे वर्षा का शुद्ध जल अन्य जलों में मिल कर वैसा ही हो जाता है, उसी प्रकार परमेश्वर को जानने वाले संत जन की आत्मा परमेश्वरमय हो जाती है । जीवन मुक्त होकर विदेह हो जाती है। वह परमात्मा प्रलय में भी जागता रहता है और जीव का जैसा कर्म होता है अथवा जैसा भाव होता है वैसी ही योनि उसे प्राप्त करवाता है । उपर की ओर मूल वाला यह जगत सनातन पीपल का वृक्ष है उसका मूल तत्व वह ब्रह्मा ही है, उसी के भय से अग्नि तपती है, सूर्य तपता है, वायु वहती है । शरीर के पतन होने से पूर्व उसका साक्षात कर लिया तो ठीक वरन् नाना लोकों व योनियों में शरीर धारण करने को विवश हो जाता है । अतःसाधक को

योगयुक्त रहने का दृढ़ अभ्यास करना चाहिए, आत्मा के अस्तित्व का दृढ़ निश्चय करे और अन्य सब प्रकार की कामनाओं से रहित होकर उसे अनुभव करे । हृदय की कुल मिलाकर एक सौ एक नाडियां है । उसमें एक नाडी मूर्धा/कपाल की ओर निकली हुई है इसे सुषुम्ना कहते हैं उसके द्वारा उपर के लोकों में जाकर मनुष्य अमृतत्व को प्राप्त करता है। दूसरी एक सौ नाडियां मरणकाल में नाना प्रकार की योनियो में ले जाने वाली होती हैं। साधक मूंज से सीक की भांति अंगुष्ठ मात्र परमात्मा को धीरतापूर्वक पृथक करके देखे ।

नचिकेता संपूर्ण योग विधि को प्राप्त करके ब्रह्म को प्राप्त हो गया । दूसरे भी इस को अपना कर आत्मा-परमात्मा का साक्षात्कार कर सकते हैं ।

४. **प्रश्नोपनिषद** = पिप्पलाद ऋषि के पास छः जिज्ञासु आए और ऋषि ने प्राण,श्रद्धा, आकाश, वायु अग्नि, जल, पृथिवी, इन्द्रिय, मन, अन्न, वीर्य, तप, मंत्र, कर्म, लोक तथा नाम ये सोलह कलाओं का वर्णन करते हुए उन्हें परमब्रह्म तक पहुंचा दिया। इन अंशों का नाम कला इसलिए है कि इन तत्वों के द्वारा पुरुष जैसे अद्‌भुत प्राणी या सृष्टि जैसी अद्‌भुत रचना का निर्माण हो गया । मृत्युादि दुःखो से पार होने के लिए जिस प्रकार रथ की नाभि में अरे इसी प्रकार जिसमें ये कलाएं प्रतिष्ठित होती हैं उस जानने योग्य पुरूष को जानो । छः जिज्ञासुयों के नाम व उनके प्रश्न :-

- ❖ कबन्धी – सृष्टि किस से उत्पन्न हुई ?
- ❖ वैदर्भि – सृष्टि को कौन धारण करता है ?
- ❖ कौशल्य – प्राण कहां से आता है और कहां रहता है ?
- ❖ सौर्यामणी – कौन सोता है, कौन जागता है, किसे सुख होता है ?
- ❖ सत्यकाम – ओंकार के ध्यान से क्या लाभ है ?
- ❖ भरद्वाज गोत्री सुकेश – १६ कलाओं वाला पुरुष कौन है ?

महाशाल शौनक ने अंगिरा ऋषि से ब्रह्म विद्या को जानना चाहा । इसमें ज्ञान का अन्तिम लक्ष्य ब्रह्म विद्या को कहा गया है । इस उपनिषद के अंगिरा ऋषि की यह खोज है कि विद्या में दो दिशाएं है — परा तथा अपरा । अपरा विद्या से सांसारिक जीवन बनता है,परा विद्या ब्रह्म विद्या है जिससे अध्यात्मिक जीवन बनता है। संसार दीखता है परन्तु इस दीखने वाले के पीछे न दीखने वाला विद्यमान है उसी के कारण यह संसार सत्य मालूम पडता है । संसार की विषय वासनाएं वे बेरी के कांटे हैं जो चेतन आत्मा में बैचेनी तथा परेशानी के छेद उत्पन्न कर देते हैं । इनसे बचना हो तो जड़ तथा चेतन के भेद को

समझो। प्रकृति रूपी वृक्ष पर जीव तथा परमात्मा इस रूप में दो पक्षी बैठे हैं। एक अपना नाता वृक्ष से जोड़ रहा है जब कि इसका असली नाता दूसरे पक्षी-परमात्मा के साथ है। अंगिरा ऋषि संसार को छोड़ने को नहीं कहते। इतना ही कहते हैं कि ससांर में रहते हुए भगवान् के साथ नाता जोड़े रखो। तभी भगवान् की विद्युत जीवन में बहती रहेगी। यदि जीव संसार को ही मिलने का प्रयत्न करता रहे तो जल औरं आग के समान दोनों का विरोधी गुण जीवन में उबाल पैदा करता रहता है। बेचैनी पैदा करता रहता है। अंगिरा ऋषि जीव की दौड परमात्मा की ओर करना चाहते हैं। महाशाल शौनक ने यही जानना चाहा था कि जीवन में शांति सुख कैसे हो, ब्रह्म को कैसे प्राप्त करें। — भिद्यते हृदय ग्रन्थि- मु. २-२-८ (द्वितीय मुंडक, द्वितीय खंड, आठवां श्लोक) - प्रणवः धनुः शरः हि आत्मा- २-२-४, मु०

६. माण्डूकोपनिषद् = मात्र १२ श्लोक हैं जिनमें ओंकार की व्याख्या, महत्व, ओंकार जप की विधियां (परा, पशयन्ती, मध्यमा, वैखरी), विश्व ही ओंकार, भूत, वर्तमान व भविष्य से जो बाहर है वह ही ओंकार आत्मज्ञान एवं ब्रह्मज्ञान के ४-४ पाद का वर्णन है। ध्यान के लिए ओंकार का जप महत्वपूर्ण है। कारण- हमारे श्वास प्रश्वास में सो-हम् की ध्वनि प्रकृति प्रदत है यही सोऽहम् उपनिषदों में यत्र तत्र बिखरा मिलता है। इसी शब्द में से स और ह को निकाल दिया जाए तो 'ओम्' रह जाता है ध्यान के लिए ध्वनि जितनी छोटी हो उतना ही ध्यान

टिकाना आसान होता है । ध्यान का प्राणायाम के साथ सीधा सम्बन्ध है। प्राणायाम में सांस भीतर लेते हुए 'सो' ध्वनि होती है, बाहर फैंकने पर 'हम' ध्वनि होती है । इसी ध्वनि के आधार पर ओम् शब्द बना है । जप के स्तरः- वाणी से जप = **वैखरी स्तर**, होंठों से मध्यमा स्तर (मन में), ओंकार हमारे लिए दृश्य रूप धारण कर लेता है- **पश्यन्ती स्तर**, तीनों स्तरों को लांघ कर अपने चेतन स्वरूप में आ जाता है ओंकार मय हो जाता है इस स्तर पर आकर जाप छूट जाता है। जाप तो एक सीढी था । जब छत पर पहुँच गए तो सीढी का काम नहीं रहता - **परा स्तर** ।

८. **तैत्तिरियोपनिषद्** - तैत्तिरिय आरण्यक/भागों/ प्रपाटकों में बंटा हुआ है उसका ७,८,९ प्रपाटक ही यह उपनिषद् है। यह उपनिषद् तीन बल्लियों में विभक्त है :-

- शिक्षाध्याय वल्ली । (Primary Education)
- ब्रह्मनन्द वल्ली १-९ अनुवाक
- भृगु वल्ली १-१० अनुवाक

(क) शिक्षा ध्याय वल्ली में वर्ण ज्ञान, स्वर ज्ञान, मात्रा ज्ञान,बल ज्ञान, साम ज्ञान, सन्तान (वाक्यों के सुसंगत प्रवाह) ज्ञान, ब्रह्मण्ड का ज्ञान, पिंड का ज्ञान, स्वाध्याय, प्रवचन, दीक्षान्त भाषण का वर्णन है (ख) ब्रह्मनन्द वल्ली में पांच कोषों का विवेचन, सृष्टि के विकास का क्रम, ब्रह्मनंद में आनंद की मात्रा, लीन अवस्था का वर्णन है (ग) भृगु वल्ली में पांच कोषों का अभिप्राय, वरूण के पुत्र भृगु की जिज्ञासा, ब्रह्म है, प्राण ब्रह्म है, मन ब्रह्म है, आनन्द ब्रह्मा है, अन्न की महिमा, भौतिक के साथ अध्यात्म का महत्व, आदि का वर्णन है । इस उपनिषद् का मुख्य विषय ज्ञान की क्रमिक श्रंखला द्वारा आत्मज्ञान तथा ब्रह्म ज्ञान कराना है । पिछले पिछले को छोड़कर आगे आगे बढना ब्रह्म ज्ञान का ही नहीं अपितु प्रत्येक ज्ञान प्राप्त करने का सही रास्ता है। छान्दोग्यपोनिषद् में भी यही पद्धति इन्द्र, विरोचन, प्रजापति के संवाद द्वारा अपनाई है । जब जीव को भौतिक जगत (अन्न) जीवन/जी लेना (प्राण), मन से संकल्प विकल्प करना, विज्ञान अर्थात ग्रह-उपग्रहों में ताक झांक करना व भोगों में चिर आनंद नही मिलता तो वह ब्रह्मनन्द की ओर बढता है ।

९. छान्दोग्य उपनिषद् ....(कुल १५२ खण्ड)

प्रथम प्रपाटक	द्वितीय प्रपाटक	तृतीय प्रपाटक	चतुर्थ प्रपाटक
१-१३ खण्ड	१-२४ खण्ड	१-१९ खण्ड	१-१५ खण्ड

पंचम प्रपाटक	षष्ठ प्रपाटक	सप्तम प्रपाटक	अष्टम प्रपाटक
१-२४ खण्ड	१-१६ खण्ड	१-१६ खण्ड	७-१५ खण्ड

इस उपनिषद् में ओंकार उपासना, उदगीथ की महिमा, उद्गीथ ओंकार ही नाम, उद्गीथ उपासना, उदगीथ सम्बन्ध में ऋषियों के पुत्र प्रवाहण - शिल्क दालम्य की कथा, उषस्ति चाक्रायण की कथा, सम्पूर्ण सृष्टि में सामगान, पंच विध सामगान, संसार संगीतमय, मुख्य लक्ष्य ओकांरपासना, वसु, रुद्र, आदित्य, ब्रह्मचारी, ब्रह्मचारी आदित्य के समान तेजस्वी तथा मधुर हों, अध्यात्मिक विकास के क्रम का चित्र, प्रयाणर्न्तगत ब्रह्मेपनीषद की व्याख्या, गायत्री की महिमा, पिड तथा ब्रह्माण्ड में ईश्वर के दर्शन, शाण्डिलय का मत, जीवन मानो सोम याग है यज्ञ है, गाडीवान रैक्व ऋषि की संवर्ग विद्या, सत्यकाम को प्रकृति द्वारा ज्ञान, सत्यकाम की तरह उपकोसल को अग्नियों द्वारा आत्मविद्या का उपदेश, मरने के वाद गति,प्राण तथा इन्द्रियों का संवाद, श्वेत केतु के ५ प्रश्न तथा उनके उतर, ब्रह्मण्ड यज्ञ व पिण्ड यज्ञ का विवरण, राजा अश्बपति का उपदेश-वैश्वानार (Cosmic Soul) क्या है, श्वेत केतु को उसके पिता का **'सदेवेदं अग्रे आसीत'** का उपदेश, श्वेतकेतु को पिता का तत्वमसि का उपदेश, नारद को सनतकुमार का उपदेश, हृदयाकाश में ब्रह्मा की तलाश, प्रजापति, इन्द्र तथा विरोचन की आत्मा के सम्बन्ध में कथा, आदि का वर्णन है ।

१०. वृहदारण्यकोपनिषद् = वृहत् आरण्यक- वृहत = बडा,

आरण्य = जंगल। यह उपनिषद सबसे बडा और उसका उपदेश जंगल में होने के कारण यह नाम का वर्णन है। इसके छः अध्याय हैं प्रत्येक अध्याय के जो भाग है उन्हें ब्राह्मण कहा गया है जो क्रमश ५,६,९,६,१५ व ५ हैं। इस उपनिषद में निःस्वार्थ कर्म, देवासुर कथा, सृष्टि की रचना, आत्म तत्व, ब्रह्म तत्व, सृष्टि के ७ प्रकार के अन्नों का वर्णन है। अज्ञान शत्रु के दृप्त बालाकि भार्ग्य को ब्रह्मोपदेश,याज्ञवल्क्य-मैत्रेयी संवाद, राजा जनक की सभा में याज्ञवल्क्य तथा अश्वल का संवाद, राजा जनक की सभा में याज्ञवल्वय तथा आर्तभाग का संवाद, राजा जनक की सभा में याज्ञवल्क्य तथा उषस्त चाक्रायण का संवाद, याज्ञवल्क्य तथा कहोल का संवाद, याज्ञवल्क्य गार्गी का सवांद, याज्ञवल्क्य तथा आरुणि उद्दालक का संवाद, याज्ञ तथा गार्गी का दोबारा संवाद, या० तथा विदग्ध शाकल्प का संवाद, राजा जनक को याज्ञवल्क्य का उपदेश, जाग्रत-स्वपन- सुषुप्ति तथा तुरीय अवस्थाओं का वर्णन, याज्ञवल्क्य की दो पत्नियाँ मैत्रेयी तथा गार्गी, ४ शब्द- माँसौदन, रक्षा तथा ऋषम, वीरेवीरम जीजनत एवं अतिपिता तथा अतिपितामह आदि का वर्णन है।

११. श्वेताश्तरोपनिषद् - छः अध्याय :-

(क) प्रथम अध्याय में - ब्रह्मण्ड का कारण, काल, स्वभाव, निर्यात, यदृच्छा आदि हैं ? ये कारण नही हैं - कारण इक्ला परमात्मा है-ब्रह्म चक्र की कल्पना, ब्रह्मण्ड में चक्र

की तथा पिण्ड में नदी की कल्पना, ईश्वर-जीव-प्रकृति का वर्णन है।

(ख) द्वितीय अध्याय में – प्राणायाम तथा योग का वर्णन है।

(ग) तृतीय अध्याय में – ईश्वर का सृष्टि में प्रत्यक्ष दर्शन का वर्णन है।

(घ) चतुर्थ अध्याय में – प्रकृति, जीव-ईश्वर का अज तथा सुपर्ण के रूप में वर्णन है।

(ङ) पाचवें अध्याय में – प्रकृति जीव ईश्वर का क्षर-अक्षर के रूप में वर्णन है।

(च) छठे अध्याय में – उपसंहार है।

प्रश्न ७५ वेदों का संक्षिप्त परिचय

उत्तर १. संख्या – ४, ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद।

२. कुल मंत्र – २०३४९ (१०५२२ + १९७५ + १८७५ + ५९७७ = २०३४९)

३. कुल शब्द – ७,०००६८ (सात लाख अढसठ)

४. ऋषि – अग्नि, वायु आदित्य, अंगिरा

५. भाषा – देववाणी, (लौकिक संस्कृत नहीं)

६. विषय – ईश्वर जीव, प्रकृति, ज्ञान कर्म उपासना, विज्ञान

७. अंग – शिक्षा, कल्प, निरूक्त, व्याकरण, ज्योतिष, छन्द।

८. उपांग – कपिल का सांख्य, गौतम का न्याय, पतञ्जलि का योग,

९. शाखाएं – ११३१ ऋ० – ३१ + यजु – १०१, + साम – १००० + अथर्व० – ९, इनमें वेदों की व्याख्याएं की गई हैं।

१०. उपनिषद – ११ ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डूक, माण्डूक,

ऐतरेय, तैतिरीय, छान्दोग्य, वृहदारण्यक, श्वेताश्वत्तर- इनमें वेदों की व्याख्या है ।

११. **स्मृतिग्रंथ** - ८०, मुख्य मनुस्मृति । पुराण = शतपथ, गोपथ, ऐतेरेय, ब्राह्मण ग्रन्थ, इतिहास, कल्प, गाथा, नाराशंसी ।

१२. **सूत्र ग्रंथ** - गृह्मसूत्र = गोभिल, पारस्कर, आश्वलायन ।

१३. **समय** - प्रत्येक सृष्टि के प्रारम्भ में ।

१४. **काल** - १,९६८५३१०४ वर्ष, श्रुति के रूप में ईश्वर द्वारा, ऋषियों द्वारा प्रगट किए गए । (वर्तमान सृष्टि में) ।

१५. **पुस्तक रूप में** - राजा इक्ष्वाकु के काल में ।

१६. **प्रमाण** - स्वतः प्रमाण ।

१७. **प्रमाणिक भाष्य** - महर्षि दयानंद सरस्वती ।

१८. **विभाग** - ऋग्वेद = १० मण्डल = १०२८ सूक्त = १०५५२ मन्त्र

यजुर्वेद = ४० अध्याय = १९७५ मन्त्र

सामवेद = २२ अध्याय = १८७५ मन्त्र

अथर्ववेद = २० काण्ड = ७६० सूक्त = ५९७७ मन्त्र

प्रश्न ७६ ऋषि दयानंद कृत ग्रन्थ कौन-कौन से हैं :-

उत्तर १.	आर्याभिविनय	९३२
२.	सत्यार्थप्रकाश	१९३२
३.	काशी शास्त्रार्थ	१९२६
४.	सत्यधर्म विचार	१९३७
५.	आर्योद्देश्य रत्नमाला	१९३४
६.	संस्कार विधि	१९३२

७. ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका १९३३

८. ऋग्वेद भाष्य १९३४-४०

९. यजुर्वेद भाष्य १९३४-३९

१०. यजुर्वेद भाषा भाष्य १९३४-३९

११. व्यवहार भानु १९३६

१२. वेद विरूद्ध मत खण्डन १९३१

१३. नारायण स्वामी मत खण्डन १९३१

१४. भ्रमोच्छेदन १९३७

१५. भ्रान्तिनिवारण १९३४

१६. पंचमहायज्ञ विधि १९३४

१७. गोकरूंणा निधि १९३७

१८. वेदाङ्गप्रकाश १९३६-३९

१९. विवाह पद्धति

२०. संस्कृत वाक्य प्रवोध १९३६

२१. वेदभाष्य का नमूना १९३२-३३

२२. अष्टाध्यायी भाष्य १९८४

२३. प्रतिमा पूजन विचार १९३०

१४. वेदान्त भ्रान्ति निवारण १९३१

२५. स्वमन्तव्याप्रकाश १९३९

प्रश्न ७७ अनार्ष ग्रन्थ, परित्याग के योग्य ग्रन्थ, जाल ग्रन्थ, कपोलकल्पित ग्रन्थ, मिथ्या ग्रन्थों के नाम ?

उत्तर १. व्याकरण में कातन्त्र, सारस्वत, चन्द्रिका, मुग्धबोध, कौमुदी, शेखर, मनोरमा आदि

२. कोश में अमरकोशादि

३. ज्योतिष में शीघ्रबोध, मुहूर्तचिन्तामणि आदि

४. काव्य में नायिका भेद, कुवलयानन्द,
 रघुवंश, माघ, किरातार्जुनीयादि
५. मीमांसा में धर्मसिन्धु, व्रतार्कादि,
६. वैशेषिक में तर्कसंग्रहादि
७. न्याय में जगदीशी आदि
८. योग में हठप्रदीपाकादि
९. सांख्य में सांख्यतत्व कौमुद्यादि
१०. वेदान्त में योग वसिष्ठ पश्चदश्यादि
११. वैद्यक में शाङ्गंघरादि
१२. स्मृतियों मे मनुस्मृति के प्रक्षिप्त
 श्लोक और अन्य सब स्मृति
१३. सब तन्त्र ग्रन्थ
१४. सब पुराण
१५. सब उपपुराण
१६. तुलसीदासकृत भाषा रामायण,
 रूक्मिणीमङ्गलादि सर्वभाषाग्रन्थ

(जैसे विष मिले दूध को त्याग देना चाहिए
ऐसे ही इन ग्रन्थों को त्याग देना चाहिए।)

प्रश्न ७८ गीता का परिचय व संदेश

उत्तर महाभारत के भीष्मपर्व के २५-४२ अध्याय तक १८ अध्याय

मुख्य संदेश है – निष्काम कर्म योग। – गीता के द्वितीय अध्याय को सम्पूर्ण गीता का निष्कर्ष कहा जा सकता है। मात्र कर्म करने में ही जीव का पूर्ण अधिकार है। मोह को त्याग कर धर्म और न्याय के लिए संघर्ष करो, कर्म करो, फल की इच्छा बिल्कुल न करो, आत्मा अजर अमर है।

प्रश्न ७९ सोलह संस्कार और उनका समय क्या है ?

उत्तर १. **गर्भाधान** — रजोदर्शन के दिन से सौलहवीं रात्रि तक उनमें प्रथम चार रात्रि तथा पर्व रात्रि वर्जित हैं । गर्भाधान प्रसन्नतापूर्व, प्रार्थनापूर्वक हो ।

२. **पुंसवन** — दूसरे - तीसरे महीने गर्भ की रक्षा के लिए।

३. **सीमन्तोन्नयन** — चौथे मास में बच्चे की मानसिक वृद्धि के लिए ।

४. **जातकर्म** — जन्म लेते ही, पिता उसकी जिह्वा पर सोने की सिलाई के द्वारा घी और शहद से ओम् लिखता है तथा कान में वेदोऽसि कहता है ।

५. **नामकरण** — ११वें, १०१वें दिन या दूसरे वर्ष में, इसका उदेश्य बालक को उद्यान की शुद्ध वायु का सेवन और सृष्टि के अवलोकन का प्रथम शिक्षण है ।

६. **अन्नप्राशन** — ६-८ मास में जब अन्न पचाने योग्य हो ।

७. **चूडाकर्म (मुण्डन)** — १-३ वर्ष में बाल काटने के लिए।

९. **कर्णवेध** — ३-५ वर्ष में कई रोगों को दूर करने के लिए।

१०. **उपनयन** — ब्राह्मण = ८वें, क्षत्रिय ११वें, वैश्य १२वें वर्ष में लड़का-लड़की को संस्कार के द्वारा यज्ञोपवीत धारण कराने के लिए ।

११. **वेदारम्भ** — उपनयन के दिन या उससे एक वर्ष के भीतर गुरुकुल में वेदों का आरम्भ गायत्री मन्त्र से करने के लिए ।

१२. समावर्तन — विद्या समाप्ति पश्चात् घर आने पर ।

१३: विवाह — विद्या समाप्ति पश्चात् घर आने पर विवाह कें समय ।

१४. वानप्रस्थ — ५० वर्ष उपरान्त अथवा पोता होने पर ।

१५. सन्यास — ७५ वर्ष उपरान्त, जितेन्द्रिय होने पर, परोपकार हेतु ।

१६. अन्त्येष्टि — मरने के पश्चात् शरीर को जलाकर ।

स्मरणीय एकिक, द्विक, त्रिक इत्यादि...

एकिक— एक धर्म ही कल्याणकारक, एक क्षमा ही उत्तम शान्ति है, एक विद्या ही परमतृप्ति है, एक अहिंसा ही सुख देने वाली है ।

द्विक — मनुष्य दो कर्म करता ही अच्छा लगता है - १. कठोर वचन न बोलता हुआ, २. दुष्टों का सम्मान न करता हुआ ।

प्रश्न ८० महत्वपूर्ण त्रिक कौन-कौन से हैं ?

उत्तर १. अनादि वस्तुएं = ईश्वर, जीवात्माएं, प्रकृति सत्व, रज, तम

२. धन की गति = दान, भोग, नाश

३. मनुष्य जन्म हेतु = यज्ञ, योग, जप / ईश भक्ति-ज्ञान-कोमलता

४. चित्त के दोष = मल, विक्षेप, आवरण (द्वेष, चंचलता, अविद्या)

५. चित्त दोष दूर कैसे हों = सत्कर्म, ध्यान, विद्या

६. मन को रोकने के उपाय = विवेक, वैराग्य, अभ्यास

७. ध्यान काल में तीन बातें = जप, भावना, समर्पण

८. त्रिगुणात्मक प्रकृति = सत्व, रज, तम

९. तीन प्रकार की बुद्धि = रबड़, काष्ठ, तैल (जड़, कुछ विकसित, विकसित)

१०. ओ३म् = अ, उ, म (उनके अर्थ)

११. योग —
- समाहित (उच्च कोटि के योगाभ्यासी सीधे समाधि लगाते हैं)
- क्रियायोग = (तप-स्वाध्याय-ईश प्रणिधान)
- अष्टांग योग —
  - बहिरंग यम से प्रत्याहार तक
  - अंतरंग = धारणा, ध्यान, समाधि

१२. त्रिताप = आधिभौतिक, आधिदैविक, आध्यात्मिक

१३. स्वाध्याय में तीन बातें = ओम् जप, अध्ययन, आत्म-निरीक्षण ।

१४. ईश-प्रणिधान = आज्ञापालन, कार्यों का लौकिक फल न चाहना, प्रेम ।

१५. पाप – अधम = पैसे का बुरे कार्यों में जाना, घुटनों का रोग, असंयम

मध्यम = कमर से गर्दन तक के रोग ।

उत्तम = गर्दन से ऊपर ज्ञानेन्द्रियों द्वारा अभद्र देखना, सुनना, कहना व इन अंगों के रोग ।

१६. प्रत्यक्ष प्रमाण में तीन शर्तें – अव्यपदेशिय हो, अव्यभिचारी हो, अव्यवसायात्मक हो (Not delusive) (Not Transient) (Not doubtful)

१७. अनुमान प्रमाण के प्रकार :— पूर्ववत = कारण को देख कार्य का अनुमान ।

शेषवत् = कार्य को देख कार्य का अनुमान
सामान्यतोदृष्ट = बिना चले दूसरे स्थान पर नहीं जा सकता ।

१८. यज्ञ के उद्देश्य / लाभ = देवपूजा, संगतिकरण, दान
१९. अनादि क्यों = जिसके तीन उत्पादक कारण न हों
२०. आदि क्यों = जिसके तीन उत्पादक कारण हों ।
२१. अनन्त क्यों (काल की दृष्टि से) जिसके विनाश के तीन कारण न हों ।
२२. तीन दुर्लभ प्राप्तियां = मनुष्य जन्म, मोक्ष की तीव्र इच्छा, योगी गुरु ।
२३. संगठन हेतु तीन आधार = सन्ध्या, स्वाध्याय, साधना
२४. ईश्वर का स्वरूप = सत् + चित् + आनन्द
२५. मोक्ष प्राप्ति के लिए = विवेक, वैराग्य, अभ्यास
२६. कर्मों का फल = जाति, आयु, भोग
२७. संयम हेतु = धारणा, ध्यान, समाधि
२८. समाधि हेतु = शुद्ध ज्ञान, कर्म, उपासना
२९. संस्कृत में पुरुष = प्रथम पुरुष, मध्यम पुरुष, उत्तम पुरुष
३०. संस्कृत में वचन = एक वचन, द्विवचन, बहुवचन
३१. संस्कृत में सन्धि = अच् सन्धि, हल-सन्धि, विसर्ग सन्धि
३२. ब्रह्मचर्य = कनिष्ठ (२४ वर्ष तक), मध्यम (४४ वर्ष पर्यन्त), उत्तम = ४८ वर्ष तक
३३. स्वास्थ्य के तीन स्तम्भ = दिनचर्या, रात्रिचर्या, ऋतुचर्या।

३४. शरीर रूपी भवन के तीन उपस्तम्भ = आहार, निद्रा, ब्रह्मचर्य ।

३५. तीन प्रकार के दाता :- **उतम** (सुपात्र को व धर्म की उन्नति के लिए), **मध्यम** (कीर्ति व स्वार्थ के लिए), **निकृष्ट** (कुपात्र व अधर्म के लिए)

प्रश्न ८१ कुछ महत्वपूर्ण चतुष्टय क्या हैं—

उत्तर १. **साधन चतुष्टय** – विवेक, वैराग्य,षट् सम्पति, मुमुक्षुत्व

२. **अनुवन्ध चतुष्टय** – अधिकारी, सम्बन्ध, विषयी, प्रयोजन

३. **मैत्री चतुष्टय (व्यवहार चतु०)** – मैत्री, करुणा, मुदिता, उपेक्षा

४. **तम चतु०** – चोरी, जारी, आलस्य, प्रमाद

५. **रज चतु०** – ईर्ष्या, द्वेष, काम, अभिमान (तमोगुण)

६. **सत्व चतु०** – साधना, सत्संग, सेवा, परोपकार (रजोगुण)

७. **अन्तःकरण** – मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार (सतोगुण)

८. **ईश लक्षण** – क्लेश, कर्म, विपाक, आशाय (अपरामृष्ट)

९. **शब्द** – नाम, आख्यात, उपसर्ग, निपात

१०. **वस्तुबोध** – गुण, कर्म, स्वभाव, स्वरूप

११. **अविद्या** – अनित्य ⇔ नित्य, अनात्म ⇔ आत्म, अपवित्र ⇔ पवित्र, दुख ⇔ सुख

१२. **वाक्य अर्थबोध** – आंकाक्षा, योग्यता, आसत्ति, तात्पर्य

१३. **अध्यात्म** – लोक, भोग, शिष्ट, वेद

१४. **ऐषणाएं** – लोकेष्णा, वितैष्णा, पुत्रैष्णा, शिष्यैष्णा

१५. **लक्ष्य** – धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष (पुरुषार्थ चतु०)

१६. **वेद विषय** – ज्ञान, कर्म, उपासना, विज्ञान ।

१७. युग चतु० – कलियुग, द्वापरयुग, त्रेतायुग, सतयुग

१८ जीव लक्षण – इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, ज्ञान (स्वाभविक)
१९. योनि – जरायुज, अण्डज, स्वदेज, स्थावर(उद्भिज)
२०. दुःख – परिणाम, ताप, संस्कार, गुणवृति विरोध
२१. समाधि – वितर्क, विचार, आनन्द, अस्मिता
२२. वैराग्य – प्रलयावस्था सम्पादन, मृत्यु का भय, कुछ मेरा नही, जन्म लेकर दुख ही दुःख।
२३. शरीर – स्थूल, सूक्ष्म, कारण, तुरिय
२४. शरीर की अवस्थाएं – जागृत, स्वपन, सुषुप्ति, समाधि।
२५. प्राणायाम – बाह्या, आभ्यान्तर, स्तम्भ वृत्ति, वाह्यआभ्यात्तर विषयक्षेपी ।
२६. प्रमाण – प्रमेय, प्रमाता, प्रमीति ।
२७. योग में उपविध्न – दुःख, दौर्मनस्य अङ्गमेजयत्व, श्वास-प्रश्वास
२८. उपासना – उच्चारण, अर्थ, सम्बोधन, समर्पण।
२९. मनुष्य – देव, असुर, राक्षस, पिशाच।
३०. धन में चार दोष – अर्जन, रक्षण, क्षय, हिंसा दोष ।
३१. धन कमाते हुए चार बातें – ईश्वर को न भूलें, हमारी पुष्टि करने वाला हो, यश – कीर्ति-सम्मान का देने वाला हो, वीरों को उत्पन्न करने वाला हो ।
३२. प्रश्न चतुष्टय – कोऽसि, कतमोऽसि, कस्यासि, को नामासि
३३. उत्तर चतुष्टय – वेदोऽसि, उत्तमोऽसि, प्रजपतेरऽस्मि, वेदनामास्मि
३४. पुरुष चतुष्टय – शरीर, मन, वृद्धि, आत्मा
३५. आश्रम – बह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, सन्यास

३६. उपास्य – अन्नब्रह्म, संकल्पब्रह्म, वेदब्रह्म, परब्रह्म

३७. ईक्षण – भिक्षा, शिक्षा, परीक्षा, दीक्षा

३८. मरण – आलस्य, अभाव, अन्याय, अज्ञान

३९. करण – अय, आय, न्याय, अध्याय

४०. वर्ण – ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शुद्र

४१. अमृतः – श्रीः, श्रीः, यशः, अमृत

४२. धर्म के चार पैर – सत्य, तप, दया, दान

४३. शौच (शुद्धि चतुष्टय) – शरीर जल से, मन सत्य से, बुद्धि ज्ञान से, आत्मा विद्या व तप से

प्रश्न ८२ महत्वपूर्ण पंचागों का परिचय दें।

उत्तर १. क्लेश – अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष, अभिनिवेष।

२. प्रमाण – प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द, एतिहास।

३. अवयव – प्रतिज्ञा, हेतु, उदाहरण, उपनय, निगमन (अनुमान प्रमाण को विस्तार से समझाने की पद्वति)

४. चित्त की अवस्थाएं – भूमियां = क्षिप्त, मूढ, विक्षिप्त, एकाग्र, निरूद्ध

५. चित्त की वृतियां – प्रमाण, विपर्यय, विकल्प, निद्रा, स्मृति

६. ईश्वर के ५ – कार्य – उत्पति, स्थिति, प्रलय, कर्मफल, वेदज्ञान

७. ईश्वर के ५ – सम्बन्ध– माता, पिता, आचार्य, राजा, उपास्य/ पुत्र, पुत्र, शिष्य, रंक, उपासक

८. क्लेशों की अवस्थाएं – प्रसुप्त, तनु, विच्छिन, उदार, दग्ध्वीज

९. सस्कारों की अवस्थाएं – प्रसुप्त, तनु, विच्छिन, उदार, दग्धबीज ।

१०. सिद्धियां – जन्म, औषधि, मन्त्र, तप, समाधि

११. उपाय प्रत्यय – श्रद्धा,वीर्य, स्मृति, समाधि, प्रज्ञा
१२. एक ही विषय से मरने वाले प्राणी – हिरण (शब्द), हाथी (स्पर्श) पतङ्ग (रूप), भ्रमर (गन्ध), मछली (रस)
१३. यज्ञ – ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, पितृयज्ञ, अतिथियज्ञ, बलिवैश्वदेव यज्ञ
१४. स्थूल भूत – पृथिवी, अप, तेज, वायु आकाश
१५. सूक्ष्म भूत – पृथिवी, अप, तेज, वायु आकाश
१६. ज्ञानेन्द्रियां – आखं, कान, नाक, जिह्वा, त्वचा
१७. विषय / पाँच तन्मात्राएँ – रूप, रस, गन्ध, स्पर्श, शब्द
१८ कर्मेन्द्रियां – वाक्, पाद, पायु, पाणि, उपस्थ
१९. यम – अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह
२०. नियम – शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय, ईश प्रणिधान,
२१. कोष – अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय, आनंदमय
२२. कर्म – उत्क्षेपण, अवक्षेपण, आकुञ्चन, प्रसारण, गमन
२३. अभाव – प्रागभाव, प्रध्वंसाभाव, अन्योऽन्याभाव, अत्यन्ताभाव, संसर्ग प्रतिषेधः
२४. समास – अव्ययीभाव, तत्पुरुष, द्वन्द्व, बहुव्रीहि, केवल
२५. दोष – सहज दोष (कामक्रोधादि), संयोग दोष (बुरे संग से), स्पर्शज दोष (अस्पर्शनियों के स्पर्श से), देश काल दोष, अभक्ष्य पदार्थों का सेवन व मिथ्याभाषणादि।
२६. अपवर्ग उपाय क्रम – दुःख जन्म प्रवृत्ति दोष मिथ्याज्ञानानाम् उत्तरो उत्तरऽपाये तदनन्तरापायात् अपवर्गः अर्थात् मिथ्या ज्ञान → दोष (राग द्वेष) → प्रवृत्ति (अच्छे बुरे कर्म)→ जन्म → दुःख ।

प्रश्न ८३ महत्वपूर्ण षट्कः

षट्क १. षट् सम्पति – शम, दम, उपरति, तितिक्षा, श्रद्धा, समाधान ।

२. **योगाभ्यास में सफलता के सूत्र** – दीर्घकाल तक, निरन्तर, विद्यापूर्वक, तपपूर्वक, ब्रह्मचर्यपूर्वक, श्रद्धापूर्वक ।

३. **जीव लक्षण** – सुख, दुख, इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, ज्ञान (न्याय दर्शन)

४. **स्तुति में** – गुण ज्ञान, कथन या गान, मनन, आचरण, सगुण–निर्गुण का ज्ञान, भांड के समान न हो ।

५. **लोक–परलोक की सफलता हेतु** – सुमन, सुधन, सुसन्तान, सत्संग, ईश्वर भक्ति, निरभिमानता ।

६. **शरीर गंदा होने के छः कारण** – उत्पत्ति स्थान के ऊपर नीचे मल मूत्र, रज वीर्य बीज गंदा, हड्डी माँस का आधार गंदा, सब द्वारों से गंदगी, मरने पर दुर्गन्ध, बार–बार शुद्ध करने पर भी अशुद्ध ।

७. **वेद् वाणी के छः तप** – नम्र, सत्य, मधु के समान मधुर, सार रूप में अल्प, हितकारी, स्वाध्याय, ईश्वर कीर्तन ।

प्रश्न ८४ महत्वपूर्ण सप्तक क्या हैं ?

सप्तक १. भूः, भुवः, स्वः, महः, जनः, तपः, सत्यं = व्याहृतियां

२. सोम, मंगल, बुध, वीर, शुक्र, शनि, रवि = दिन

३. वैशेषिक दर्शन– द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय, अभाव इन सात पदार्थों के तत्व ज्ञान से मुक्ति ।

४. सात प्रकार का सुखः – (i) असम्प्रज्ञात समाधि का सुख,

(ii) १००% वैराग्य का सुख, (iii) ५१-१००% वैराग्य का सुख, (iv) १-५०% वैराग्य का सुख, (v) पूर्ण न्याय से प्राप्त धन का सुख, (vi) कुछ न्याय कुछ अन्याय से प्राप्त धन का सुख, (vii) पूर्णतया अन्याय से प्राप्त धन का सुख ।

प्रश्न ८५ महत्वपूर्ण अष्टकों का परिचय दें ।

अष्टक १. गीता में योग के प्रकार- सांख्य योग, कर्म योग, ध्यान योग, विभूति योग, विश्वरूपदर्शन योग, भक्ति योग, पुरुषोत्तम योग, मोक्ष-सन्यास योग ।

२. **पतञ्जलि योग** – यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा ध्यान, समाधि ।

३. **विभिक्तयाँ** – कर्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान, सम्बन्ध, अधिकरण, सम्बोधन ।

४. **अष्ट चक्र** — मूलाधार, स्वाधिष्ठान चक्र, यकृत चक्र, नाभि-चक्र, हृदय चक्र, विशुद्ध चक्र (कण्ठ चक्र), आज्ञा चक्र, सहस्रार चक्र ।

५. **दिशाएं** – पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण, आग्नये, नैर्ऋति, वायवी, ऐशानी ।

६. **आठ वसु** – पृथिवी, अप, तेज, वायु आकाश, सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र ।

७. **क्रोध से उत्पन्न होने वाले आठ व्यसन** – चुगली, बलात्कार, द्रोह, असूया (दोषों में गुण व गुणों में दोष), अर्थ दूषण, कटोर वचन, ईर्ष्या, निरपराध को दण्ड देना।

८. **आठ प्रकार के मैथुन** – स्त्रियों का दर्शन अर्थात उन्हें दोष

दृष्टि से देखना, उनकी चर्चा, अङ्गस्पर्श, चिन्तन, गुप्त मन्त्रणा, एकान्त सम्भाषण, क्रिया निष्पत्ति ।

प्रश्न ८६ नवक/नवधा

१. **नव द्रव्य** – पृथिवी, जल, तेज, वायु, आकाश, काल, दिशा, आत्मा और मन

२. **योग में विघ्न** – व्याधि, सत्यान, संशय, आलस्य, प्रमाद, अविरति, भ्रान्ति दर्शन, अलब्धभूमिकत्व, अनावस्थितत्वानि ।

३. **पढ़ने पढ़ाने के विघ्न**– कुसङ्ग, दुष्टव्यसन, अब्रह्मचर्य, वेदादिशास्त्रों का प्रचार न होना, अतिभोजन, अतिजागरण, परीक्षा लेने देने में आलस्य व कपट, सर्वोपरि विद्या का लाभ न समझना, जड़ पदार्थों के दर्शन–पूजन में समय खोना।

४. **द्वार** – दो आंख, दो कान, दो नाक, मुख, गुदा, उपस्थ ।

५. **तुष्टि दोष** – प्रकृति, उपादान, काल, भाग्य, पार, सुपार, पारम्पार, अनुत्तमाम्भ, उत्तमान्भ ।

६. **योगाभ्यास न करने से हानियां** – व्यवहार से अन्यों को दुःखी, कृतघ्न–मूर्ख, इन्द्रियों का दास, सूक्ष्म विषय अग्राह्य, द्वन्दों से दुःखी, सुसंस्कार दवे रहना, समाधान शक्ति का ह्रास, ईश्वरीय ज्ञान–बल–आनंद से वंचित, मोक्ष से दूर,

७. **भक्ति** – सन्तों का संग, कथा वार्ता में प्रेम, गुरु सेवा, स्तुति, मन्त्र जप, इन्द्रिय निग्रह, रासमय सर्व संसार से विराग, संतोष, धर्मपूर्वक व्यवहार ।

८. **वैशेषिक में जीव के लक्षण** – प्राण, अपान, निमेष, उन्मेष, जीवन, मनन, इन्द्रिय, अन्तर्विकार ।

प्रश्न ८७ महत्त्वपूर्ण दशक :–

१. आर्य समाज के दश नियम
२. इसाइयों के १० Commandments
३. यम नियम
४. १० लकार = लट्, लिट्, लुट, लृट, लेट-लोट, लङ्, लिङ्-लुङ्-लृङ
५. धर्म के दस लक्षण = धृति, क्षमा, दम, अस्तेय, शौच, इन्द्रिय निग्रह, धी, विद्या, सत्य, अक्रोध
६. गण = भवादिगण, अदादि, जुहोत्यादि, दिवादि, स्वादि, तुदादि, रूधादि, तनादि, क्रयादि, चुरादि
७. दशप्राण - प्राण, अपान, व्यान, उदान, समान, नाग, कूर्म्म, कृकंल, देवदत्त, धनञ्जय
८. दश दिशाएं - पूर्व, पश्चिम्, उत्तर, दक्षिण, आग्नेय, नैर्ऋति, वायवी, ऐशानी, नीचे उपर ।
९. काम से उत्पन्न होने वाले दश व्यसन - शिकार खेलना, चौपड खेलना, जुआ खेलना, दिन में सोना, निन्दा/काम कथा, स्त्रियों का अतिसंग, मादक द्रव्यों का सेवन, गाना-बजाना, नाच करना - कराना, वृथा घूमना ।
१०. विवाह करने में दश कुलों का त्याग - सत्क्रिया से हीन, सत्पुरुषों से रहित, वेदाध्ययन से विमुख, बड़े बड़े लोम, बवासीर, क्षयी, दमा, खाँसी, अमाशय, मिरगी, श्वेतकुष्ठ।

प्रश्न ८८ महत्वपूर्ण एकादशकः-

१. ग्यारह इन्द्रियां - ५ ज्ञान + ५ कर्म + मन
२. रूद्र - १० प्राण + जीवात्मा

प्रश्न ८९ महत्वपूर्ण चतुर्दशक :-

१. चतुर्दशक = दोष (१४) चोरी, जारी, आलस्य, प्रमाद, मादक द्रव्य सेवन, मिथ्याभाषण, हिंसा, क्रूरता, ईर्ष्या, द्वेष, काम, अभिमान, मोह ।

२. धन में चौदह दोष = चोरी, हिंसा, झूठ, दंभ, काम, क्रोध, मद, भेदभाव, शत्रुता, अविश्वास, ईर्ष्या, जुआ, शराब, व्यभिचार ।

प्रश्न ९० महत्वपूर्ण पञ्चदशक :-
मोक्ष हेतु साधन - विद्या - अविद्या का व्यवहारिक ज्ञान, योगाभ्यास, परमेश्वर- आज्ञापालन, उत्तम कर्म, सत्संग, विवेक, वैराग्य षट् सम्पति, मुमुक्षुत्व की भावना, अनुबन्ध चतुष्टय, श्रवण चतुष्टय, मैत्री चतुष्टय, सत्वगुणों का धारण, प्रातः सायं दो घंटे ध्यान ।

प्रश्न ९१ महत्वपूर्ण षडदशक् :-
अहंकार से १६ तत्व - ५ सूक्ष्मभूत (तन्मात्राएं रूप आदि) (५- ज्ञानेन्द्रियां + ५ कर्मेन्द्रियां + मन) न्यायदर्शन के १६ तत्वः प्रमाण, प्रमेय, संशय, प्रयोजन, दृष्टांत, सिद्धान्त अवयव, तर्क, निर्णय, वाद, जल्प, वितण्डा, हेत्वाभास, छल, जाति, निग्रह स्थान (उनके तत्वज्ञान से मुक्ति)

प्रश्न ९२ सूक्ष्म शरीर के १७ तत्वः ५ - ज्ञानेन्द्रियां + ५ कर्मेन्द्रियां (प्राण) + ५ सूक्ष्म भूत + मन + बुद्धि ।

प्रश्न ९३ योगभ्यासी के १८ कर्त्तव्य - लक्ष्य का निरन्तर चिन्तन, अनुशासन, यम नियम का पालन, तपस्या, शब्द प्रमाण

परं दृढ विश्वास, व्यवहार में मधुरता, वाणी में मधुरता

स्वस्थता, सम्मान की उपेक्षा, अविद्या का त्याग, प्रत्येक कार्य ईश्वर प्राप्ति हेतु, विषयी अर्थात् पठन मनन में ईश्वर का ही विषय, श्रवण चतुष्टय, पात्रता, दूसरों के गुण ही देखना, दूसरों को सुख देना, साधनों का प्रयोग शरीर रक्षा हेतु, हेय-हेयहेतु व हान हानोपाय का चिन्तन, अल्प भोजन शंका समाधानं प्रेमपूर्वक करना ।

प्रश्न ९४ **१८ - अच्छे बुरे कर्म - शरीर से** - रक्षा, दान, सेवा, हिंसा, चोरी, व्यभिचार **वाणी से**- सत्य, मधुर-हितकर, सार्थक/झूठ, कठोर-अहितकर, निरर्थक **मन से** — सेवा, अस्पृहा, आस्तिकता, द्रोह, स्पृहा, नास्तिकता ।

प्रश्न-९५ **वैशेषिक दर्शन के २४ गुण —**
रूप, रस, गन्ध, स्पर्श, संख्या, परिमाण, पृथकत्व, संयोग, विभाग, परत्व, अपरत्व, बुद्धि, सुख, दुःख, ईच्छा, द्वेष, प्रयत्न, गुरुत्व, द्रवत्व, स्नेह, संस्कार, धर्म, अधर्म और शब्द ।

प्रश्न ९६ • **सांख्य के २४ पदार्थ** - प्रकृति, महतत्व, अहंकार, मन + ५ (ज्ञानेन्द्रियां + कर्मेन्द्रियां + सूक्ष्म भूत + स्थूल भूत)

• **२४ प्रकार की जीवात्मा की स्वाभाविक शक्तियां** - बल, पराक्रम, आकर्षण, प्रेरणा, गति, भीषण, विवेचन, क्रिया, उत्साह, स्मरण, निश्चय, इच्छा, प्रेम, द्वेष, संयोग, विभाग, संयोजक, विभाजक, श्रवण, स्पर्शन, दर्शन, स्वादन, गन्धग्रहण, ज्ञान ।

प्रश्न ९७ ३४ देवता :- ८- वसु - पृथिवी, आप, तेज, वायु, आकाश, सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र, ११ रूद्र- प्राण, अपान, व्यान, समान, उदान, नाग, कूर्म्म, कृकंल, देवदत्त धनञ्जय, जीवात्मा

(Exp, Insp, Motor and Circulatory Systems, Belching, Swallowing, Hunger, Yawning, Muscle Tone, Twinkling). **12 - आदित्य, इन्द्र (Electricity), यज्ञ, महादेव ईश्वर ।**

प्रश्न ९८ ऋषिदयानन्द के ५१ मन्तव्य क्या है ?

५१ मन्तव्य/पदार्थ (ऋषिदयानंद) -

ईश्वर, वेद,धर्म, अधर्म, जीव, जीव-ईश्वर में भिन्नता-अंभिन्नता, अनादि पदार्थ, प्रवाह से अनादि, सृष्टि, सृष्टि का प्रयोजन, सृष्टि सकर्तृक, बन्ध, मुक्ति, मुक्ति के साधन, अर्थ-अनर्थ, काम, वर्णाश्रम, राजा, प्रजा, न्यायकारी, देव-असुर-राक्षस- पिशाच, शिक्षा, पुराण, तीर्थ, पुरुषार्थ, मनुष्य, संस्कार, यज्ञ, आर्य-दस्यु, आर्य्यवर्त्त, आचार्य, शिष्य, गुरु, पुरोहित, उपाध्याय, शिष्टाचार, प्रमाण, आप्त, ५-परीक्षाएं, स्वतन्त्र-परतन्त्र, स्वर्ग, नरक, जन्म-मृत्यु, विवाह, नियोग, स्तुति, प्रार्थना, उपासना, सगुण निर्गुण, स्तुति प्रार्थनोपासना ।

प्रश्न ९९ **८१ प्रकार की हिंसा** - कृत, कारित, अनुमोदित-प्रत्येक लोभ, कोध, मोह के आधार पर तीन-तीन प्रकार की, पुनः प्रत्येक मृदु, मध्य, अधिमात्र-पुनः प्रत्येक मृदु-मृदु, मध्यमृदु, तीव्र मृदु ।

प्रश्न १०० आर्यों के सौ रत्न क्या हैं ?

१०० रत्न : ईश्वर आदि १०० तत्वों के लक्षण (आर्योदश्यरत्नमाला) ईश्वर, धर्म, अधर्म, पुण्य, पाप, सत्यभाषण, मिथ्याभाषण, विश्वास, अविश्वास, परलोक, अपरलोक, जन्म, मरण, स्वर्ग, नरक, विद्या, अविद्या, सत्यपुरुष, तीर्थ, स्तुति, स्तुति का फल, निन्दा, प्रार्थना, प्रार्थना का फल, उपासना, निर्गुणोपासना, सगुणोपासना मुक्ति, मुक्ति के साधन, कर्त्ता, कारण ,उपादान कारण, निमित्त कारण, साधारण कारण, कार्य, सृष्टि, जाति, मनुष्य, आश्चर्य, आर्यवर्त्तदेश, दस्यु, वर्ण, वर्ण के भेद, आश्रम, आश्रम के भेद, यज्ञ, कर्म, क्रियमाण, सञ्चित, प्रारब्ध, अनादि पदार्थ, प्रवाह से अनादि पदार्थ, अनादि का स्वरूप, पुरुपार्थ, पुरुषार्थ के भेद, परोपकार, शिष्टाचार, सदाचार, विद्यापुस्तक, आचार्य, गुरु, अतिथि, पञ्चायतन पूजा, अपूजा, जड, चेतन, भावना, अभावना, पण्डित, मूर्ख, ज्येष्ठनिष्ठ व्यवहार, सर्वहित, चोरी त्याग, व्यभिचार त्याग, जीव का स्वरूप, स्वभाव, प्रलय, मायावी, आप्त. परीक्षा, आठप्रमाण, लक्षण, प्रमेय, प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द, ऐतिह्य, अर्थापत्ति, सम्भव, अभाव, शास्त्र, वेद, पुराण, उपवेद, वेदाङ्ग, उपाङ्ग, नमस्ते ।

प्रश्न १०१ ईश्वर के मुख्य एवं गौण नामों का परिचय दीजिए ।

उत्तर ओ३म् ईश्वर का मुख्य नाम है कुछ गौण नाम निम्न प्रकार हैं :—

(क) आर्य समाज के १-२ नियमों के आधार पर = २५

सच्चिदानंदस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वन्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र, सृष्टिकर्ता, सृष्टिधर्ता, सृष्टिहर्ता, मोक्ष दाता = २४ सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते है उनका आदि मूल = १

(ख) कुछ मन्त्रों के आधार पर —

- प्राणायामः भूः भुवः स्व, महः जनः तपः सत्य = ७
- शन्नौ मित्र :- मित्र, वरूण, अर्यमा, वृहस्पति, विण्णु. रुरूक्रम, ब्राह्मण, वायो, ब्रह्मा, ऋत, सत्य = ११
- खं ब्रह्म = २
- अकामो - अकामा, धीरा, अमृत, स्वयंभू, रसेन तृप्तः, न कु तश्च-न्यून, आत्मानं, धीरं, अजरं, युवानम् = १०
- सः परिअगातः परिअगात, शुक्र, अकायम, अवर्ण अस्नाविरं, शुद्धं, अपापविद्वम, कविः मनीषि, परिभू, स्वयंभू, शाश्वतिभ्यः समाभ्यः = १२
- गायत्री मन्त्रः ओ३म्, भूः, भूवः, स्वः, सवितुः, वरेण्यं, भर्गो, देवस्य (धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्) = ८
- मनसा परिक्रमाः अग्नि, इन्द्र, वरूण, सोम, विष्णु, बृहस्पति = ६
- ओ३म्ः अ- विराट, अग्नि विश्व, उ = हिरण्यगर्भ - वायु, तैजस, म-ईश्वर, आदित्य, प्राज्ञ = ९

(ग) योगदर्शनः क्लेश रहित, शुभअशुभकर्म रहित, कर्मफल

रहित, कर्मों के संस्कार रहित, (क्लेश कर्म विपाक आशय अपरामृष्ट पुरुष विशेष ईश्वरः) = ४

(घ) विविध -

- ब्रह्म विष्णु गणेश, शिव, शंकर, महादेव, रुद्र, कालाग्नि = ८
- भूमि, पृथिवी, जल, अग्नि,वायु, आकाश, वसु = ७
- मङ्गल, बुध, शुक्र, शनिश्चर, राहु, केतु, सूर्य, चन्द्र = ८
- माता-पिता, गुरु, आचार्य, राजा, न्यायाधीश, विधाता, स्वामी, रक्षक = ८
- यज्ञ, होता, बन्धु, पितामह, प्रपितामह = ५
- शक्ति, श्री, लक्ष्मी, देवी, देवता, सरस्वती, सविता = ७
- निरञ्जन, निर्गुण, नारायण, निराकार = ४
- सगुण,निर्गुण, यम, धर्म्मराज = ४
- शुद्ध, बुद्ध, मुक्त, मनु = ४
- आत्मा, परमात्मा, परमेश्वर, ईश्वर, विश्वेश्वर, भगवान = ६
- पुरुष, आप्त, प्रिय, कवि, कुवेर, काल, कूटस्थ, शेष = ८

नोट :— ईश्वर में अनन्त गुण होने के कारण अनन्त नाम हैं। यहाँ लगभग १६४ नामों का संकेत किया गया है ओ३म् ईश्वर का मुख्य नाम है शेष गौण नाम हैं। ईश्वर के गौण नामों से मूर्तियाँ बनाकर पूजना मूर्खता है।)

निम्न १०१ प्रश्नों को याद करें बच्चों को करवाएं व परीक्षा लें

प्रश्न पत्र पूर्णांक २००

१.	हमारे देश का मूल नाम	:	आर्यवर्त
२.	हमारा मूल नाम	:	आर्य
३.	हमारा धर्म	:	वैदिक
४.	हमारी धर्म पुस्तक	:	वेद
५.	वेद कितने हैं	:	चार - ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद
६.	वेद कैसे प्रकट हुए	:	चार ऋषियों के मन में ईश्वर की प्रेरणा द्वारा जैसे बिना बोले भय, शंका आदि ।
७.	वेद कब प्रकट हुए	:	१,९६,०८,५३,१०५ वर्ष पूर्व
८.	वेदों के कितने मन्त्र हैं	:	२०३४९ (१०५२२+१९७५+१८७५+५९७७) (ऋ.+यजु.+साम.+ अथर्व. क्रमशः)
९.	वेद पुस्तक रूप में कब आए	:	राजा इक्ष्वाकु के काल में
१०.	वेद संस्कृत में क्यों	:	पूर्ण भाषा, इसे सीखने में सबको एक जैसी मेहनत करनी पड़ती है ।
११.	वेदों में क्या है	:	ईश्वर, जीव, प्रकृति का ज्ञान

१२.	पूजा का क्या अर्थ है	:	सत्कार करना, आज्ञाओं का पालन करना, प्रातः सांय १-१ घण्टा ईश्वर का ध्यान करना
१३.	अनादि शब्द का अर्थ	:	जिसकी उत्पत्ति के तीन मूल कारण न हों
१४.	अनादि वस्तुएँ कितनी हैं	:	तीन - ईश्वर, जीव, प्रकृति
१५.	अनादि वस्तुओं के लक्षण	:	ईश्वर — सच्चिदानन्द, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, जीव, सुख दुःख इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, ज्ञान, प्रकृति — सत्व, रज, तम, जड़
१६.	ईश्वर के मुख्य पाँच कर्म	:	सृष्टि की रचना, पालन, संहार, वेदों का ज्ञान, अच्छे बुरे कर्मों का फल
१७.	ईश्वर के पाचं सम्बन्ध	:	पिता-पुत्र, माता-पुत्र, गुरु-शिष्य, आचार्य-शिष्य, राजा-प्रजा, व्यापक-व्याप्य, साध्य-साधक
१८.	मूर्ति पूजा कब से प्रारम्भ हुई	:	जैनियों से, उनकी मूर्खता से, लगभग २५०० वर्ष पूर्व
१९.	मूर्ति पूजा क्यों प्रारम्भ हुई	:	स्वार्थ पूर्ति, जैनियों की देखा-देखी
२०.	मूर्ति पूजा करना पाप क्यों है	:	क्योंकि यह वेद विरूद्ध है - न तस्य प्रतिमा अस्ति (यजु.३२.३)
२१.	सृष्टि उत्पत्ति काल	:	४ अरब ३२ करोड़ वर्ष
२२.	सृष्टि प्रलय काल	:	४ अरब ३२ करोड़ वर्ष

२३. सृष्टि प्रवाह से क्या है : अनादि

२४. मोक्ष काल : ३१ नील १० खरब ४० अरब वर्ष (परान्तकाल, ३६००० बार सृष्टि उत्पत्ति प्रलय समय)

२५. मोक्ष के उपाय : अविद्यानाश, योगाभ्यास, विवेक वैराग्य, सत्संग, षट् सम्पति, मुमुक्षुत्व

२६. मोक्ष की परिभाषा : सब दुःखों से छूटकर एक परान्तकाल तक पूर्ण सुख में रहना, दुःख लेश मात्र भी न होना।

२७. रामायण काल : लगभग १० लाख वर्ष

२८. महाभारत काल : लगभग ५२१७ वर्ष

२९. जैनबौद्ध काल : लगभग २५०० वर्ष

३०. शंकराचार्य काल : लगभग २३०० वर्ष

३१. हिन्दू मत काल : लगभग २२०० वर्ष

३२. पुराण मत काल : लगभग २२०० वर्ष

३३. ईसाई मत काल : लगभग २००४ वर्ष

३४. मुस्लिम मत काल : लगभग १४०० वर्ष

३५. सिक्ख मतकाल : लगभग ५०० वर्ष

३६. ब्रह्मकुमारी मतकाल : लगभग १०० वर्ष

३७. पुनर्जन्म क्यों : अच्छे बुरे कर्म, कुसंस्कार, वासनाएं, मिथ्या ज्ञान

३८. पुनर्जन्म सिद्धि : मैं मेरेपन की भावना, बचपन से मेधावी विद्यार्थी, पूर्वजन्म स्मृति

की घटनाएं, वेदों उपनिषदों के प्रमाण, जड़ शरीर चेतन नहीं हो सकता ।

३९.	योग के अंग	:- यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि
४०.	यम नियमों के नाम	: यम :- अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, नियम :- शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय, ईश्वर प्रणिधान
४१.	धर्म के लक्षण	: धृति, क्षमा, दम, अस्तेय, शौच, इन्द्रिय निग्रह, धी, विद्या, सत्य, अक्रोध
४२.	वर्ण कितने, नाम	: चार—ब्राह्मण, वैश्य, क्षत्रिय, शुद्र
४३.	आश्रमों के नाम	: ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थी, संन्यास
४४.	आदि मनुष्य सृष्टि कैसे	: सत्व रज तम से रज वीर्य, भूगर्भ में उनका मिलान, युवावस्था तक भूमि द्वारा पोषण
४५.	आदि मनुष्य सृष्टि कहाँ हुई	: तिब्बत में
४६.	पहले अण्डा या मुर्गी	: अण्डा (सत्व, रज, तम के मिलान से सब जीवों के अण्डों का निर्माण आदि सृष्टि में)

४७.	आर्ष ग्रन्थों के नाम	:	ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद, उपनिषद्, छः दर्शन, ब्राह्मण ग्रन्थ, मनुस्मृति
४८.	गायत्री मन्त्र का शब्दार्थ	:	ओं = सबका रक्षक, भू = प्राणों का प्राण, भुवः = दुःख विनाशक, स्वः = सुखस्वरूप, तत् = आप, संतितु = सबका शाश्वत पिता-माता, वरेण्यं = वरणे योग्य, भर्गः = मृदुस्वरूप, देवस्य = देवों का देव, धीमहि = धारण करें, धियो = बुद्धि, नः हमारी, प्रचोदयात = अच्छे मार्ग से प्रेरित करें।
४९.	गायत्री मन्त्र भावार्थ	:	ईश्वर के ज्ञान बल आनन्द को प्राप्त करें, उसकी आज्ञा में रहे, अच्छी बुद्धि प्राप्त हो।
५०.	मूर्ति पूजा से हानियाँ	:	धन, समय, बुद्धि, श्रद्धा का नाश, जीवन व्यर्थ, पाप, दुराचार, फूलों का नाश, दासता का कारण, बुद्धि जड़, मोक्ष सुख से वंचित, बन्धन का कारण
५१.	चाय से हानियाँ	:	पेट में जख्म, एसिडिटी, कब्ज, नसों का कमजोर होना, ग्यारह प्रकार के विष
५२.	सिगरेट से हानियाँ	:	फेफड़ों का कैंसर, ऐसीडिटी,

दमा, मुंह का कैंसर, २४ प्रकार के विष

५३. शराब से हानियाँ : जिगर का सूखना, पेट में जख्म, धन परिवार का नाश, उच्च रक्तचार, हृदय रोग

५४. गुटका से हानियाँ : मुँह का कैंसरु, नस-नाड़ियों का कमजोर होना, पेट के रोग

५५. पेप्सी, कोक से हानियाँ : नपुसंकता, Ph = 2.2. से 2.8, दस प्रकार के विष, पेट, दिल दिमाग के रोग, लकवा

५६. नेकटाई से हानियाँ : काला मोतिया, घुटन, तनाव

५७. मांस अंडे से हानियाँ : हृदयाघात, लकवा, कब्ज, पेट के रोग, एक अंडे में २३४ ग्राम कॉलिस्ट्रोल

५८. भूत प्रेत का अर्थ : भूत = बीता हुआ, प्रेत = मृत शरीर

५९. ज्योतिप विद्या का अर्थ : गणित - ज्योतिप ठीक, फलित ज्योतिष झूठ, ग्रहण व ग्रहों की स्थिति का ज्ञान

६०. कृष्ण की पत्नी का नाम : रुक्मणी

६१. क्या हनुमान बन्दर थे : नहीं, वह एक मानव जाति थी, बालि, सुग्रीव आदि भी मनुष्य ही थे

६२. क्रिया योग का फल : समाधि सिद्ध करने एवं क्लेशों को कम करने में सहायक

६३. यज्ञोपवीत का अर्थ : तीन प्रकार के ऋणों से उऋण होने का व्रत - ऋषि ऋण, पितृ ऋण, देव ऋण

६४. हवन के लाभ : वायुमण्डल की शुद्धि, अनेक प्रकार के रोगों का उपचार, शरीर, मन, बुद्धि की पवित्रता, देवपूजा, संगति करण - दान

६५. सृष्टि उत्पत्ति क्रम : सत्व रज तम प्रकृति → महतत्व → अहंकार → ५ सूक्ष्मभूत + ५ ज्ञानेन्द्रियां + ५ कर्मेन्द्रियां + मन

६६. चार युगों का काल : ४३,२०,००० वर्ष
४,३२,००० कलियुग
८,६४,००० द्वापरयुग
१२,९६,००० त्रेतायुग
१७,२८,००० सतयुग

६७. आर्य समाज के उपनियम : वेदों को जानना, दैनिक सन्ध्या हवन, शतांश चन्दा, आर्य शब्द का प्रयोग, मांस, अंडे, मूर्तिपूजा आदि को छोड़ना - छुड़वाना

६८. आर्य समाज का प्रथम, द्वितीय नियम : (१) सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सबका आदि मूल ईश्वर है ।
(२) ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा,

अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वन्तर्यामि, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र व सृष्टिकर्ता है उसी की उपासना करनी योग्य है ।

६९.	विवाह से पूर्व सावधानियाँ	: समान गोत्र, कद, रोग, नगर, गाँव, आयु न हो; आनुवांशिक रोग, सतक्रियाहीन, नास्तिक, परस्पर विरुद्ध गुण कर्म स्वभाव न हों, आयु कम से कम युवक २५ वर्ष, युवति १८ वर्ष हो ।
७०.	ब्रह्मचर्य के लाभ	: शरीर मन बुद्धि व आत्मा का विकास, दीर्घायु, तीव्र स्मरण शक्ति, रोगों से बचाव
७१.	त्रैतवाद का अर्थ	: ईश्वर, जीव प्रकृति तीन अनादि तत्वों से सृष्टि रचना, क्रमशः नैमेतिक, साधारण उपादान कारण
७२.	अद्वैतवाद का अर्थ	: ईश्वर अद्वितीय व अनुपम है, न कि जीव ब्रह्म, उसका अंश या प्रतिबिम्ब है
७३.	ईश्वर के मुख्य नाम का अर्थ	: ओ३म्, अ — विराट, अग्नि, विश्व, उ — हिरण्यगर्भ, वायु तैजस, म — ईश्वर, आदित्य, प्राज्ञ

७४.	ईश्वर के गौण नाम	:	ब्रह्म, विष्णु, गणेश, महादेव, शिव, माता, पिता, गुरू, आचार्य, राजा, न्यायाधीश, विधाता, स्वामी, रक्षक, मंगल, बुद्ध, शुक्र, शनि, राहू, केतु, अग्नि, इन्द्र, वरूण, सोम
७५.	ऋषि दयानन्द कृत मुख्य ग्रन्थ	:	सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्य-भूमिका, संस्कारविधि, आर्यविभिन्य, यजुर्वेदभाष्य, व्यवहार
७६.	सत्यार्थ प्रकाश के कितने समुल्लास हैं	:	चौदह
७७.	सत्यार्थ प्रकाश के ७, ८, ९, का विषय क्या है	:	क्रमशः ईश्वर, सृष्टि उत्पत्ति, मुक्ति - पुनर्जन्म
७८.	ऋषि दयानन्द ने कितनी आयु में घर छोड़ा	:	लगभग २० वर्ष
७९.	ऋषि दयानन्द कितने वर्ष खोज करते रहे	:	लगभग २० वर्ष
८०.	ऋषि दयानन्द ने कितने वर्ष प्रचार किया	:	लगभग २० वर्ष
८१.	ऋषि दयानन्द को कितनी बार विष दियां गया	:	सतरह बार (अन्तिम विष २९ सितम्बर १८८३, इसके ३२ दिन बाद ३० अक्टूबर १८८३ को मृत्यु हुई

८२.	ऋषि दयानन्द ने कुल कितने ग्रन्थ लिखे	: ३२ (बत्तीस)
८३.	ऋषि दयानन्द की जन्म मृत्यु का समय	: जन्म १८२४, मृत्यु १८८३ (दीपावली)
८४.	आर्य समाज की स्थापना: कब और क्यों की गई	बम्बई १८७५, वेदों की पुनः स्थापना हेतु
८५.	प्रतिदिन यज्ञ क्यों करें	: कर्तव्य एक महान पुण्यकार्य, न करने से पाप व पशु योनि
८६.	पाँच महायज्ञों के नाम	: ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, पितृयज्ञ, अतिथियज्ञ, बलिवैश्वदेवयज्ञ्
८७.	१६ संस्कारों के नाम	: गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्तोनयन, जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अनुप्राशन, चूड़ाकर्म, उपनयन, वेदारम्भ, समावर्तन, विवाह, वानप्रस्थ, सन्यास, अन्येष्टि
८८.	निष्काम कर्म ही क्यों	: सकाम कर्मों से बन्धन होता है
८९.	अविद्या के लक्षण	: अनित्य↔नित्य, अपवित्र ↔ पवित्र, अनात्म ↔ आत्म, दुःख ↔ सुख
९०.	दुःखों का मूल कारण	: मिथ्याज्ञान→दोष→प्रवृति→ जन्म
९१.	चोटी रखने के लाभ	: लकवा नहीं होता, मस्तिष्क विकसित होता है, सुषम्ना नाड़ी को उचित उष्मा, वीर्यरक्षा, ओज, प्राण शक्ति का आकर्षण, ध्यान में सहायक

९२.	आर्ष पाठ विधि का क्रम:	अष्टाध्यायी व्याकरण → महाभाष्य → निरुक्त → निघन्टु → वेद → उपवेद
९३.	आर्ष पाठ विधि का महत्व	: इससे जितना ज्ञान २५ वर्षों में उतना अन्य पाठ विधियों से सौ वर्षों में भी नहीं, मोक्ष प्राप्ति में सहायक
९४.	प्राणायामों के नाम	: बाह्य, आभ्यान्तर, स्तम्भवृति, बाह्यआम्यान्तर विषयक्षेपी
९५.	प्राणों के नाम	: प्राण, अपान, व्यान, समान, उदान, नाग, कुर्म्म, कृकंल, देवदत्त, धनञ्जय
९६.	ग्यारह उपनिषदों के नाम	: ईश, केन, कठ, मुण्डक, माण्डुक प्रश्न, बृहदारण्यक, छान्दोग्य, ऐतरेय, तैत्तिरीय, श्वेताश्वतर ।
९७.	दर्शनों के नाम	: योग, सांख्य, न्याय-वैशेषिक, वेदान्त, मीमांसा
९८.	डी.ए.वी. का पूरा नाम	: दयानन्द एंग्लो वैदिक
९९.	नचिकेता के तीन वर	: पिता की प्रसन्नता, मृत्यु के पश्चात् आत्मा कहाँ, आत्मग्नि कैसे प्राप्त हो ?
१००.	गाय के उपकार	: एक पीढ़ी में ४,७५,६००० मनुष्यों का पालन, गाय का घी, दूध, दही, छाछ व हवन से शरीर, मन, बुद्धि आत्मा का विकास,

रोगों का नाश, गोबर व मूत्र से अनेक रोगों का उपचार

१०१. अदृश्य वस्तुओं के नाम : ईश्वर, जीव, प्रकृति, सुख-दुःख, वायु, गैसें, कई प्रकार की किरणें, रस, गन्ध, शब्द, मन, करुणा, लकड़ियों में अग्नि, फूलों में सुवास, तिलों में तेल, मूलाधर में शक्ति, शरीर में विद्युत, वायु में गैसें, ध्वनियां, चित्र, रेडियो व टी.वी. चैनलों के चित्र व ध्वनियाँ मोबाइल (चल) दूरभाषों की तरंगें, भूख, प्यास आदि ।

साधक और सामान्य जन में अन्तर
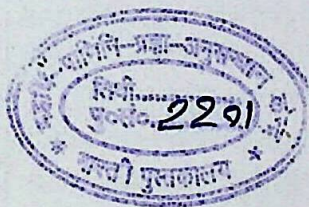
	साधक		सामान्य जन
१.	सब भोगों, पदार्थों, व्यंजनों आदि में चार प्रकार का दुःख रूपी विष मिला देख उनका त्याग करता है अथवा आवश्यकतानुसार ही उनका उपयोग करता है।	१.	भोगों, पदार्थों, व्यंजनों में बड़ा सुख दिखता है उनको अधिक से अधिक मात्रा में भोगने का प्रयत्न करता है।
२.	अन्याय, अत्याचार, आरोपों आदि को सहर्ष सहन करता है तनिक भी विचलित नहीं होता। अपमान को अमृत के तुल्य समझता है क्योंकि उससे वैरागय एवं मोक्ष प्राप्ति में सहायता मिलती है।	२.	अन्याय, अत्याचार, आरोपों व अपमान को सहन नहीं कर पाता, दुःखी होता है, अन्यों को दुःखी करता है, प्रतिशोध की आग में जलता रहता है, हिंसा, अधर्म में भी डूब जाता है।
३.	मन को जड़ समझकर एक यन्त्र की नाईं वश में रखकर चलता है।	३.	मन को खुला रखकर चलता है, जो दिल चाहे खाता है, करता है, बोलता है, लिखता है।
४.	बासा, भोजन, मिर्च, मसाले, खट्टे एवं अधर्म से प्राप्त धन, सम्पत्ति, राज्य, पद प्रतिष्ठा आदि को छूता भी नहीं।	४.	ऐसे भोजन एवं पदार्थ उसे अच्छे लगते हैं खूब खाता है, सोता है, पहनता है, अधर्म से धन, सम्पत्ति राज्य पद आदि ग्रहण करने में तनिक भी संकोच नहीं करता।

५. झूठ बोलते हुए कांपता है, उससे दूर रहता है, सदैव सत्य का ही आचरण उसे अच्छा लगता है चाहे प्राण ही क्यों न चले जाएं।	५. छोटी-छोटी बातों में भी झूठ बोलने में उसे कोई बुराई नहीं दिखती। हानि उसे अच्छी नहीं लगती। सदैव लाभ की ही सोचता है चाहे उसके लिए उसे कितना ही झूठ क्यों न बोलना पड़े।
६. लौकिक कार्यों, औपचारिकताओं, पार्टियों आदि में जाना उसे अच्छा नहीं लगता।	६. ये सब कार्य उसे बहुत अच्छे लगते हैं उनमें बढ़चढ़ कर भाग लेता है।
७. ऐषणाओं विशेषकर लौकेषणा को विष के तुल्य समझता है।	७. ऐषणाओं की पूर्ति के लिए दिन-रात भाग दौड़ करता है।
८. अपनी धन-सम्पत्ति को सुपात्रों में देने का प्रयास करता है।	८. धन सम्पत्ति को मोहवश पुत्र-पौत्रों आदि को ही देता है चाहे वे कितने ही अवज्ञाकारी, नास्तिक और लंपट हों।
९. साधक अपने आपको छुपाने की कोशिश करता है।	९. अपने आपको दिखाने की, प्रसिद्ध होने की कोशिश करता है।
१०. नियमित दिनचर्या एवं साधना को किसी भी हालत में नहीं छोड़ता।	१०. दिनचर्या नियमित नहीं होती, साधनादि में रुचि बहुत कम या बिल्कुल नहीं होती।
११. किसी से द्वेष नहीं करता क्योंकि वह जानता है कि सब प्राणी ईश्वर की ही सन्तान हैं और सबमें उस जैसी ही आत्मा	११. जो कोई उससे द्वेष करता है, उसका विरोध करता है उसकी निन्दा करता है वह उससे भयंकर द्वेष करता है,

	है कोई कितना भी बुरा करे वह उसका भला ही सोचता है, उनके लिए सद्बुद्धि की प्रार्थना करता है । वह यह भी भली प्रकार जानता है कि किसी एक से भी द्वेष कर लेने से, लेने के देने पड़ सकते हैं अर्थात् मोक्ष तो बहुत दूर, पशु-पक्षियों की योनियों में जाना पड़ सकता है ।	उसकी हानि करने की सोचता है, उसके नाश की प्रार्थनाएं करता है, योजनाएं बनाता है।
१२.	साधक सदैव यह समझता है कि सर्वव्यापक, सर्वज्ञ, सच्चिदानन्द, परमेश्वर उसे देख, सुन और जान रहा है, उसी की उपस्थिति में वह सब कार्य कर रहा है ।	वह प्रायः नास्तिक होता है अथवा तथाकथित आस्तिक होता है । ईश्वर को अंग संग मान कर कार्य नहीं करता इसलिए प्रायः अधर्म, अन्याय, अत्याचार, छल, कपट में ही मग्न रहता है ।
१३.	शब्द प्रमाण व अनुमान प्रमाण पर दृढ़ विश्वास रखता है संशय उठे तो शीघ्र ही प्रमाणों से उसे दूर रक लेता है ।	वह वेदादि शास्त्रों व ऋषिकृत ग्रन्थों के वचनों पर संशय करता रहता है और संशय को दूर करने का प्रयास नहीं करता ।
१४.	साधक सबका कल्याण चाहता है इसी दृष्टि से सच्चे धर्म की राह दिखाता है और अन्धविश्वासों व पाखंडों को	वह स्वार्थी होता है पहले अपना भला फिर ओरों का भला या बुरा । सामाजिक कुरीतियों, अन्धविश्वासों में स्वयं ही

दूर करने का प्रयास करता है।	ग्रस्त रहता है उन्हें दूर करने वालों का खण्डन करता है।
१५. साधक जो ईश्वर की दृष्टि में ठीक होता है उसी का आचरण करता है। दुनिया चाहे कुछ भी कहे वह ईश्वर का ही अनुसरण करता है।	१५. उसे दुनिया क्या कहेगी बस इसी की चिन्ता रहती है। वह बस बहुमत की ओर झुकना जानता है।
१६. साधक को चिन्ता रहती है कि दुष्कर्म, अधर्म आदि करने से ईश्वर उसे गधा, सुअर, कुत्ता, भेड़िया, चूहा आदि की योनि में डाल सकता है, लंगड़ा, लूला, अंधा या रोगी उत्पन्न कर सकता है।	१६. उसे इन बातों की कोई परवाह नहीं होती। भीतर ही भीतर सोचता हे ये सब कहने की बातें हैं, कल्पनाएं हैं।
१७. अरबों-खरबों प्रकार के बीज, पिण्ड, सौर मण्डलों आदि की अद्भुत रचना, व्यवस्था एवं बेजोड़ उपकारों आदि का चिन्तन कर ईश्वर पर दृढ़ विश्वास, प्रेम व कृतज्ञता का भाव रखता है।	१७. वह प्रायः इस ओर ध्यान ही नहीं देता। सांसारिक क्रियाकलापों, रिश्तों, मित्रों, चलचित्रों आदि में ही उलझा रहता है।
१८. साधक सूक्ष्म मात्रा में शुद्ध सात्विक भोजन लेकर आलस्य, प्रमाद व निद्रा को दूर रख कर ईश चिन्तन में लगे रहना चाहता है।	१८. वह खूब खा पीकर ८-१० घंटे की नींद लेना चाहता है। दिन में भी सोता रहता है। रात्रि के एकान्त का उसके लिए विशेष महत्वं नहीं होता।

साधक के लिए रात्रि का मौन, सन्नाटा, ध्यान के लिए है ।	
१९. दूसरों के गुण देखता है अपने अवगुण देखता है ।	१९. वह प्रायः दूसरों के अवगुण देखता है अपने में उसे गुण ही गुण दीखते हैं ।
२०. दूसरों को सुख पहुँचाने के लिए स्वयं दुःख उठाता है।	२०. स्वयं के ही सुख को प्राथमिकता देता है चाहे उसके क्रियाकलापों से दूसरे कितने ही दुखी क्यो न हों। अपने दुश्मनों का दुःख पहुँचाने में तो वह बहुत आनन्द लेता है।
२१. यज्ञ, सत्संग, स्वाध्याय में उसका मन लगता है । उसके लिए पर्याप्त समय निकालता व पुरुषार्थ करता है ।	२१. इन कार्यों में उसकी कोई विशेष रुचि नहीं होती ।

जीवात्मा सम्बन्धी प्रश्न

२३. क्या जीवात्मा भूत प्रेत बनती है ? (नहीं)

२४. जीवात्मा के ईश्वर से क्या-क्या सम्बन्ध हैं ? (पिता-पुत्र, गुरु-शिष्य, व्याप्य-व्यापक, उपास्य-उपासक, राजा-प्रजा)

२५. जीवात्मा के दुखों का कारण क्या है ? (अविद्या)

२६. जीवात्मा की आत्मकथा क्या है ? (मैं जीवात्मा सत् चित्, अनादि, अजर-अमर, अल्पज्ञ, अल्पशक्तिमान, परिच्छिन्न, सुख-दुख, ईच्छा-द्वेष, प्रयत्न ज्ञान व २४ प्रकार की शक्तियों वाली हूँ)

२७. जीवात्मा भौतिक है या अभौतिक ? (अभौतिक)

२८. क्या जीवात्मा घटता बढ़ता है ? (नहीं)

२९. क्या स्त्रियों में भी आत्मा होती है ? (हाँ)

३०. एक सुई की नोक पर कितनी आत्माएं आ सकती हैं ? (सभी)

३१. क्या जीवात्मा अपनी इच्छा से शरीर छोड़ सकती है ? (नहीं)

३२. क्या जीवात्माएं स्थान घेरती है ? (नहीं)

३३. जीवात्मा की मुक्ति कैसे हो सकती है ? (अविद्या का नाश, विद्या की वृद्धि, शुद्ध ज्ञान कर्म उपासना, अष्टांग योग, कामनाओं – वासनाओं – ऐषणाओं का त्याग, सत्संग, विवेक, वैराग्य, षट् सम्पत्ति, मुमुक्षुत्व की भावना, परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन, उत्तम कर्म, मैत्रीचतुष्ट्य,)

३४. क्या जीवात्मा परमाणु में भी रह सकती है ? (रह सकती है)

३५. क्या जीवात्मा में ईश्वर भी रह सकता है ? (रह सकता है, सूक्ष्म होने के कारण ईश्वर जीवात्मा में ओतप्रोत रहता है)

३६. क्या सब जीवात्माएं पृथक-पृथक हैं ? (पृथक-पृथक हैं)

३७. जीवात्माएं कितने प्रकार की हिंसा कर सकती हैं ? (८१ प्रकार की)

३८. जीवात्मा कितने प्रकार के कर्म कर सकती है ? (शुभ, अशुभ, मिश्रित, निष्काम)

३९. क्या शुभकर्म करने से जीवात्मा की मुक्ति हो जाती है ? (शुभ कर्म करने से अच्छा जन्म मिलता है, मुक्ति तो निष्काम कर्मों से ही होती है)

४०. क्या जीवात्मा को अपना पूर्व जन्म स्मरण रहता है ? (अल्पज्ञ एवं अल्पशक्तिमान होने के कारण नहीं रहता)

सम्पादक / लेखक का एक संक्षिप्त परिचय

वर्तमान नाम- डॉ. मुमुक्षु आर्य वानप्रस्थ

पूर्व नाम- डॉ. अशोक कुमार बन्सल (डॉ. ए. बी. आर्य)

पिता का नाम- स्वर्गीय श्री लक्ष्मण दास बन्सल

माता का नाम- श्रीमती विद्यावती

गुरू का नाम- महर्षि दयानन्द सरस्वती एवं योगनिष्ठ स्वामी [illegible] परिव्राजक

जन्म स्थान- रामपुरा, पंजाब, जन्म तिथि - 13 अप्रैल 194[illegible]

शिक्षा-आर्य हाई स्कूल, रामपुरा पंजाब, एस. एम. हिन्दू हाई स्कूल सोनीपत, एस. [illegible] कॉलिज, बरा[illegible] डी.ए. वी. कॉलिज, जालंधर, मैडीकल कॉलिज अमृतसर, पंजाब विश्वविद्यालय, [illegible] विश्वविद्या[illegible] आर्य गुरुकुल होशंगाबाद, दर्शनयोग महाविद्यालय रोजड़, गुजरात ।

योग्यता- एम.बी.बी.एस., एम.डी., एम.आर.सी.पी., पी.सी.एम.एस. । वेद, [illegible] सत्यार्थ[illegible] आदि आर्य ग्रन्थों का स्वाध्याय । वैदिक प्रवक्ता व प्रचारक के रूप में स्कूल, कॉलेज[illegible] व समाज[illegible] आदि में प्रवचन एवं निःशुल्क साहित्य वितरण । हृदय रोग विशेषज्ञ के रूप में निःशुल्क [illegible]-परामर्श।

कार्यभार- अध्यक्ष - वेद संस्थान नोएडा, पूर्वाध्यक्ष - आर्य समाज नोएडा, आर्य गुरुकुल नोएडा, वानप्रस्थ आश्रम नोएडा, आर्य युवक सभा अमृतसर, उपाध्यक्ष - आनन्दपथ जनसेवा ट्रस्ट मेरठ, ऋषि सिद्धान्त रक्षिणी सभा दिल्ली, मन्त्री - आर्य समाज अमृतसर, रजिस्ट्रार - सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली । अखिल भारतीय श्रद्धानन्द दलितोद्धार सभा दिल्ली, सम्पादक- ऋषि सिद्धान्त मासिक, क्रान्त्युदय पत्रिका, संरक्षक आर्य सेवक मासिक नागपुर, संयोजक सार्वदेशिक विद्या आर्य सभा, दिल्ली । पजांब, दिल्ली, उत्तरप्रदेश के कई सरकारी व गैर सरकारी अस्पतालों में मैडीकल ऑफिसर व विभागाध्यक्ष के रूप में सेवा कार्य ।

संस्थापक- आर्य गुरुकुल नोएडा, वानप्रस्थाश्रम नोएडा, गौशाला, पुस्तकालय, महर्षि दयानन्द स्मृति पुरस्कार, पं. गुरुदत्त विद्यार्थी स्मृति पुरस्कार, पं. रामप्रसाद बिस्मिल स्मृति पुरस्कार, चन्द्रशेखर आजाद स्मृति पुरस्कार, पं. राम प्रसाद बिस्मिल सभागार, साधना केन्द्र, वेद संस्थान नोएडा ।

वानप्रस्थ दीक्षा- 28 फरवरी 1999, स्थान - वानप्रस्थाश्रम नोएडा, स्वामी सत्यपति परिव्राजक जी द्वारा दीक्षित, उन्हीं के सान्निध्य में रह कर योग प्रशिक्षण, सघन साधना एवं शेष जीवन साधना, स्वाध्याय व सेवा का संकल्प ।

लेखन/सम्पादन- गागर में सागर (भूलोक की कहानियाँ), विद्या-अविद्या, मुक्ति, वैदिक प्रश्नोत्तरी, प्रकाश की ओर । पत्र-पत्रिकाओं में वेदादि शास्त्रों पर आधारित लेख ।

सेवा प्रकल्प- योग शिविर, चिकित्सा शिविर, रक्त दान शिविर, निःशुल्क साहित्य वितरण, वैदिक प्रवचन, संस्कार, अनाथों, विधवाओं एवं असहाय रोगियों आदि को आर्थिक सहयोग, गुरुकुल विद्यार्थियों को छात्रवृत्तियाँ, राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय सत्यार्थप्रकाश प्रतियोगिताओं का आयोजन, यज्ञ, योग एवं वेद व का प्रचार-प्रसार ।